आज़ादी का अमृत महोत्सव

जनेप प्राधिकरण
JNPA

G20 भारत 2023 INDIA

अभिव्यक्ति

जवाहरलाल नेहरू पत्तन प्राधिकरण की गृह पत्रिका

अंक- 36

सितम्बर 2023

हमारे पत्तन में हिन्दी पखवाड़ा 2023 का आयोजन

विषय सूची

सरंक्षक

श्री संजय सेठी, भा.प्र.से

अध्यक्ष

श्री उन्मेष शरद वाघ, भा.रा.से

उपाध्यक्ष

मुख्य संपादक

विनय बहादुर मल्ल

प्रबंधक (राजभाषा)

संपादक मंडल

रोहित त्रिपाठी

परितोष निगम

संजय राजाराम पाटिल

मनोहर जनार्दन म्हात्रे

रचनाकारों से अनुरोध

अभिव्यक्ति पत्रिका के लिए आप की रचनाऐं निम्नलिखित पते पर आमंत्रित हैं-

राजभाषा अनुभाग, प्रशासन विभाग,
जवाहरलाल नेहरू पत्तन प्राधिकरण, शेवा,
नवी मुंबई-400707
E mail: hindicell@jnport.gov.in

क्रम सं.	विषय	पृष्ठ सं.
1	अध्यक्ष महोदय का संदेश	2
2	उपाध्यक्ष महोदय का संदेश	3
3	संपादक का संदेश	4
4	जवाहरलाल नेहरू पत्तन प्राधिकरण के गौरवशाली 34 वर्ष	5
5	हमारे पत्तन के बारे में कुछ रोचक जानकारी	9
6	आज़ादी का अमृत महोत्सव	11
7	"बंदरगाहों में स्वास्थ्य, सुरक्षा, गुणवत्ता और पर्यावरण का प्रबंधन"	13
8	कविता: धरा पर जब धरो पग	16
9	त्वमेव माता पिता त्वमेव	17
10	कविता: माँ	19
11	पुस्तक समीक्षा 'अग्नि की उड़ान'	20
12	कविता: बचपन	21
13	निसर्ग की गोद में स्थित मेरा कार्यालयीन परिसर	22
14	कविता: वो महिला दिवस मनाती है	25
15	विगत 75 वर्षों में राजभाषा हिंदी की विकास यात्रा	26
16	पंढरपुर की वारी	29
17	सत्य की शक्ति, सत्यमेव जयते	33
18	कविता: इंद्रधनुष	34
19	कविता: आओ झूमें तिरंगा लेकर	35
20	हिन्दी पखवाड़ा 2023	36
21	शब्दकोश	39
22	कविता: माँ भारती	41

अस्वीकरण : अभिव्यक्ति में प्रकाशित सामग्री में लेखकों ने अपने व्यक्तिगत विचार प्रस्तुत किए हैं। जवाहरलाल नेहरू पत्तन प्राधिकरण का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। व्यक्तिगत लेखों और कविताओं के रचनाकार अपने कॉपीराइट के लिए स्वयं जिम्मेदार रहेंगे। अभिव्यक्ति में प्रकाशित सामग्री का किसी भी अन्य रूप में प्रयोग करने से पूर्व संपादक मंडल से अनुमति प्राप्त करना आवश्यक है।

-संपादक

अध्यक्ष महोदय का संदेश

सभी कर्मचारियों और अधिकारियों के सक्रिय योगदान से संकलित हमारी पत्रिका 'अभिव्यक्ति' का प्रकाशन, मुझे परमानन्द और गर्व से आत्म विभोर कर देता है। पत्रिका के अनेक रचनाकारों ने अपनी सृजनात्मक प्रतिभा का प्रशंसनीय उदाहरण प्रस्तुत किया है। हमारे अन्तर्मुखी व्यक्तित्व के बहिर्मुखी होने में, साहित्य का योगदान अत्यंत प्रमुख है।

मानवता और सभ्यता का प्रभावी विकास तभी सम्भव है, जब एक सुविकसित भाषा समाज में विद्यमान हो। भाषा के कारण ही विभिन्न भू-भागों में रहने वाले लोग, एक-दूसरे के समीप आते हैं। भारत जैसे विशाल देश के लिए, हिन्दी का विकास न केवल सामाजिक और साहित्यिक विकास सुनिश्चित करता है, बल्कि राष्ट्रीय एकता का भी संवर्धन करता है। हिन्दी का विकास हमारे देश के विभिन्न प्रान्तों में रहने वाले लोगों को एक दूसरे के समीप लाएगा। प्रभावी संप्रेषण तभी सम्भव है, जब एक लोकप्रिय भाषा का माध्यम देशवासियों में आत्मसात हो।

हमारे संगठन में मराठी लोगों की बाहुल्यता है, किन्तु फिर भी उनके द्वारा हिन्दी में रचित कृतियों ने इस पत्रिका को अलंकृत किया है। वर्तमान परिदृश्य में हिन्दी का विकास हमारे देश में अपने चरमोत्कर्ष पर है। 16 अक्तूबर, 2022 को मध्य प्रदेश में एमबीबीएस की शिक्षा भी हिन्दी में शुरू कर दी गई है। जिससे यह सिद्ध हो जाता है कि सभी व्यवसायों तथा कार्यक्षेत्रों में हिन्दी का प्रयोग सम्भव है। मेरा सभी कर्मचारियों और अधिकारियों से अनुरोध है कि वे अपने दैनिक जीवन तथा कार्यक्षेत्रों में हिन्दी का अधिकाधिक प्रयोग सतत् सुनिश्चित करते रहें।

मैं इस पत्रिका की सफलता की कामना करते हुए, संपादक मंडल एवं सभी रचनाकारों को शुभकामनाएं देता हूँ।

संजय सेठी

संजय सेठी, भा.प्र.से.
अध्यक्ष
जवाहरलाल नेहरू पत्तन प्राधिकरण

उपाध्यक्ष महोदय का संदेश

आप सभी को 'अभिव्यक्ति' पत्रिका का 36 वाँ अंक सौंपते हुए, मुझे अपार हर्ष की अनुभूति हो रही है। हिन्दी हमारी राजभाषा के रूप में तो प्रतिष्ठित है ही, साथ ही साथ जन मानस के अन्तर्मन पर भी प्रमुखता से विद्यमान है। हमारे संगठन की यह पत्रिका, कर्मचारियों और अधिकारियों की सृजनात्मक क्षमताओं का सजीवतापूर्वक प्रदर्शन करती है।

हम सभी लोगों में कुछ न कुछ विलक्षण प्रतिभाऐं जन्मजात होती हैं और उन प्रतिभाओं का समुचित विकास न केवल हमारे व्यक्तित्व को निखारता है, बल्कि हमारे समाज और संगठन के सर्वांगीण विकास में भी निर्णायक भूमिका अदा करता है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि हमारे संगठन की यह पत्रिका, राजभाषा के सतत् विकास को आगे बढ़ाएगी। हमारे देश की सांस्कृतिक एवं भाषायी विविधता के परिप्रेक्ष्य में, राजभाषा का अधिकतम विकास नितान्त आवश्यक है। अनौपचारिक रूप से, हिन्दी हम सभी देशवासियों को एकता के सूत्र में बाँधती है। वैश्विक पटल पर भी, हमारे शीर्ष नेताओं द्वारा विश्व के लिए हिन्दी में सम्बोधन हमारी राजभाषा को और अधिक गर्वान्वित करता है तथा साथ ही साथ सभी देशवासियों को हिन्दी के अधिकाधिक प्रयोग की प्रेरणा भी देता है।

मेरा सभी कर्मचारियों और अधिकारियों से अनुरोध है कि सभी प्रशासकीय कार्यों और दैनिक जीवन में हिन्दी का प्रयोग अधिकाधिक करें ताकि हम अपने संवैधानिक और नैतिक कर्तव्यों का निर्वहन कर सकें। हमारी पत्रिका को अपनी सुन्दर रचनाओं से विभूषित करने वाले रचनाकारों को मैं हार्दिक बधाई देता हूँ।

उन्मेष शरद वाघ, भा.रा.से.
उपाध्यक्ष
जवाहरलाल नेहरू पत्तन प्राधिकरण

सम्पादक का संदेश

जवाहरलाल नेहरू पत्तन प्राधिकरण की 'अभिव्यक्ति' पत्रिका के 36 वें अंक को सौंपते हुए, मुझे अपार प्रसन्नता हो रही है तथा पत्रिका के प्रकाशन में सभी कार्मिकों और अधिकारियों की सक्रिय प्रतिभागिता और सृजनात्मक साहित्यिक क्षमताओं को देखकर गर्वान्वित भी महसूस करता हूँ। हमारी पत्रिका के प्रकाशन को लेकर लोगों में असीम उत्साह दिखा तथा हमारी आशा से बढ़कर लोगों की रचनाऐं प्राप्त हुई। किन्तु पत्रिका में पर्याप्त स्थान शेष न होने के कारण तथा पत्रिका के पूर्व निर्धारित समय पर प्रकाशन को सुनिश्चित करने हेतु, सभी रचनाओं को इसी अंक में शामिल करना संभव नहीं था। रचनाकारों की सृजनशीलता और परिश्रम का सम्मान करते हुए, मैं आप सभी को आश्वस्त करता हूँ कि हमारी पत्रिका के आगामी अंकों में उन सभी रचनाओं को स्थान दिया जायेगा, जिन्हें अभी स्थान नहीं मिल पाया है।

हमारी राजभाषा के प्रगामी प्रयोग एवम् प्रचार – प्रसार के कारण, देश के प्रत्येक भाग में हिन्दी समझने वाले और बोलने वाले लोगों की संख्या लगातार बढ़ रही है। राजभाषा के प्रचार में सरकार ने औपचारिक तौर पर प्रमुखता से अपनी भूमिका निभाई है। किन्तु राजभाषा को अपने चरमोत्कर्ष पर पहुंचाकर सुशोभित करना, हम सभी का सामूहिक उत्तरदायित्व है। यदि हम हिन्दी को अपने दैनिक जीवन एवं कार्यालयों की कार्य प्रणाली का एक अभिन्न अंग बना लेंगे, तो निश्चित रूप से हिन्दी का प्रचार प्रसार बढ़ेगा।

करत् करत् अभ्यास ते, जड़मत् होत सुजान।
रसरी आवत् जात् ते, शिल पर पड़त् निशान ।।

उपर्युक्त दोहे के अनुसार, जिस प्रकार रस्सी के बार-बार रगड़ने से पत्थर पर भी निशान पड़ जाते हैं, ठीक उसी प्रकार से निरन्तर अभ्यास से अल्पबुद्धि भी ज्ञानवान हो जाता है। अगर कोई भी व्यक्ति हिन्दी में कार्य करने का निरन्तर अभ्यास करेगा, तो कुछ ही समय में वह अवश्य पारंगत हो जायेगा। मुझे पूर्ण विश्वास है कि हमारे संगठन में सभी कार्मिक एवम् अधिकारीगण अधिक से अधिक कार्य हिन्दी में करेंगे तथा राजभाषा को राष्ट्रभाषा बनाने में पूर्ण सहयोग देंगे। हमारे गृहस्थ जीवन और कार्यालयों में हिन्दी का प्रयोग, हमारी राजभाषा को गर्वान्वित करता है और ऐसा करना हम सभी का संवैधानिक कर्तव्य भी है। हिन्दी प्रयोग को बढ़ाने के लिए, हमें सभी बाधाओं को प्रत्येक स्तर पर दूर करना होगा ताकि हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त लोग देश के प्रत्येक हिस्से में उपलब्ध हों।

मुझे आशा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास है कि यह पत्रिका सभी पाठकों के लिए लाभप्रद और ज्ञानवर्धक सिद्ध होगी।

विनय बहादुर मल्ल

विनय बहादुर मल्ल
प्रबंधक (राजभाषा)

जवाहरलाल नेहरू पत्तन प्राधिकरण के गौरवशाली 34 वर्ष

श्रीमती मनीषा जाधव
महाप्रबंधक (प्रशा.) एवं सचिव
और राजभाषा अधिकारी

26 मई, 1989 को देश के 12 वें महापत्तन अर्थात् जवाहरलाल नेहरू पत्तन का प्रचालन आरंभ हुआ । देश के तत्कालीन प्रधानमंत्री स्वर्गीय राजीव गांधीजी ने इसका उद्घाटन किया। शुरू में केवल बल्क कार्गो प्रहस्तन के लिए इसकी परिकल्पना की गई थी लेकिन आज यह देश का शीर्ष कंटेनर पत्तन बन गया है। अपने 34 वर्ष की यात्रा में ज ने पत्तन ने कार्गो प्रहस्तन में नए नए कीर्तिमान स्थापित कर सिर्फ हमारे देश ही नहीं, दुनिया के व्यापार जगत में भी अपनी विशेष पहचान बना ली है।

ऊपर बताए अनुसार पत्तन की शुरुवात बल्क कार्गो प्रहस्तन से हुई थी, लेकिन दुनिया भर में कंटेनर द्वारा कार्गो के नौवहन की व्यापार जगत की बढ़ती मांग को देखते हुए पत्तन ने कंटेनर टर्मिनल की ओर रुख किया और ज. ने. पत्तन कंटेनर टर्मिनल का जन्म हुआ। वैश्विक स्तर की यंत्र सामग्री, कुशल श्रम शक्ति, बेहतर प्रबंधन के परिणामस्वरूप; इस कंटेनर टर्मिनल ने समुद्री व्यापार जगत में जल्द ही अपनी विशेष पहचान बना ली। बेहतर प्रदर्शन के कारण व्यापार जगत ज. ने. प. कंटेनर की ओर आकर्षित हो गया तथा हमें एक और कंटेनर टर्मिनल की आवश्यकता महसूस होनी लगी । भारत सरकार ने सार्वजनिक निजी भागीदारी में तथा निर्माण, प्रचालन एवं हस्तांतरण आधार पर ज. ने. पत्तन में एक कंटेनर टर्मिनल के विकास का निर्णय लिया जिसके लिए वैश्विक निविदाएँ आमंत्रित की गई। इसमें विश्व की शीर्ष कंपनियों ने भाग लिया जिसमें पी एण्ड ओ नामक ऑस्ट्रेलियाई कंपनी सफल रही। इस कंटेनर टर्मिनल के विकास का कार्य उन्हे सौंपा गया और वर्ष 1999 में देश का पहला निजी कंटेनर टर्मिनल विकसित

हुआ जिसका प्रबंधन वर्तमान में डीपी वर्ल्ड द्वारा किया जाता है। कालांतर से बल्क टर्मिनल को भी कंटेनर टर्मिनल में परिवर्तित कर उसे गेटवे टर्मिनल ऑफ इंडिया कहा जाने लगा, जिसका प्रबंधन एपी मोलार समूह द्वारा किया जाता है। एन. एस. आई. सी. टी. के उत्तर की ओर 330 मीटर का एक और टर्मिनल विकसित किया गया जिसका प्रबंधन डी पी वर्ल्ड द्वारा किया जाता है । पत्तन में एक द्रव टर्मिनल भी है; बीपीसीएल द्वारा

जिसका प्रबंधन किया जाता है। इसके साथ ही देश का सबसे बड़ा कंटेनर टर्मिनल जिसकी लंबाई 2 कि.मी. है; पोर्ट ऑफ सिंगापूर एथोरीटी द्वारा विकसित किया है। ज. ने. पत्तन के स्वामित्व वाले ज. ने. प. कंटेनर टर्मिनल को भी हाल ही में एक निजी पार्टी जे.एम.बक्षी और सीएमए सीजीएम को सौंपा गया है। इस तरह से हमारा पत्तन देश का पहला लैंडलॉर्ड पत्तन बन गया है।

ज. ने. पत्तन देश का शीर्ष कंटेनर पत्तन है तथा देश की आयात-निर्यात में महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर रहा है। यह कहते हुए हमें गर्व होता है कि देश की कुल कंटेनरीकृत आयात-निर्यात के लगभग 50 प्रतिशत से अधिक का प्रहस्तन हमारे पत्तन में होता है तथा देश को प्राप्त कुल सीमाशुल्क के लगभग 28 प्रतिशत सीमाशुल्क राजस्व हमारे पत्तन से प्राप्त होता है।

पिछले वित्त वर्ष (2022-23) में ज ने पत्तन ने 6.05 दशलक्ष टीईयू का प्रहस्तन कर अब तक का सर्वोत्तम कीर्तिमान स्थापित किया है। साथ ही 399 मीटर कुल लंबाई वाले दो जलयानों का प्रहस्तन कर जेएनपीए ने व्यापार जगत को अपनी बढ़ती क्षमता का परिचय दिया है। अपने बेहतर प्रदर्शन के कारण ज. ने. पत्तन को देश के

सर्वोत्कृष्ट कंटेनरीकृत पत्तन के साथ ही अन्य विविध प्रतिष्ठित पुरस्कारों से नवाजा गया है।

माला पुरस्कार 2023 – वर्ष का सर्वोत्कृष्ट कंटेनरीकृत महापत्तन पुरस्कार प्राप्त करते हुए हमारे अध्यक्ष महोदय श्री संजय सेठी (भा. प्र. से.)

ज. ने. पत्तन हमेशा से ही कर्मचारी कल्याण को प्राथमिकता देता रहा है, इसके तहत पत्तन अपने कर्मचारी/अधिकारियों के लिए बीमा संरक्षण सहित विविध सुविधाएँ प्रदान करता है । कर्मचारियों एवं अधिकारियों के बच्चों के साथ ही पत्तन परियोजना प्रभावित व्यक्तियों के बच्चों को बेहतर शिक्षा प्रदान करने हेतु पत्तन द्वारा पत्तन नगरक्षेत्र में दो विद्यालय चलाए जाते हैं। साथ ही महिला सशक्तिकरण एवं कल्याण के लिए भी पत्तन प्रबंधन हमेशा तत्पर रहता है तथा विविध उपाय करता है । पत्तन शुरू से ही अपना सामाजिक दायित्व भी निभाता रहा है, परियोजना प्रभावित गांवों/व्यक्तियों तथा महाराष्ट्र सहित देश के जरूरत मंद गैर सरकारी संस्थाओं को निगमित सामाजिक दायित्व फंड आबंटित किया जाता है । बाढ़, सूखा जैसी प्राकृतिक आपदा की चपेट में आने वाले गांवों को भी पत्तन ने हमेशा आर्थिक सहायता की है।

आयात-निर्यात को बढ़ावा देने के साथ ही पत्तन प्रबंधन अपने दैनिक प्रशासनिक कार्यों में हिंदी के प्रयोग को भी बढ़ावा देता रहा है । अपने रोज के प्रशासनिक कार्य में हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग करने हेतु कर्मचारियों/ अधिकारियों को प्रोत्साहित करने के लिए हम प्रोत्साहन योजना भी चलाते हैं । साथ ही नराकास के तत्वावधान में हम पत्तन में प्रति वर्ष न केवल

पत्तन, पोत परिवहन और जलमार्ग मंत्रालय की ओर से अपने अधीनस्थ कार्यालयों को राजभाषा शील्ड योजना के तहत पुरस्कार प्रदान किए जाते हैं । इसी योजना के तहत जनेपप्रा को वर्ष 2013-14 से 2017-18 तक लगातार पांच वर्ष प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ था। 29/07/2023 को विज्ञान भवन, नई दिल्ली में संपन्न हिंदी सलाहकार समिति की बैठक में मंत्री महोदय श्री सर्बानंद सोनोवाल जी के करकमलों से श्री संजय सेठी, भा. प्र. से., अध्यक्ष, जनेपप्रा को शील्ड और प्रमाणपत्र प्रदान किया गया। साथ में श्रीमती. मनीषा जाधव, महा प्रबंधक (प्रशासन) एवं सचिव तथा राजभाषा अधिकारी, जनेपप्रा भी उपस्थित थीं|

एक प्रतियोगिता आयोजित करते हैं बल्कि प्रतिभागियों को पत्तन प्रचालन से भी अवगत कराते हैं। साथ ही नराकास द्वारा आयोजित विविध प्रतियोगिताओं में भी हमारे कर्मचारियों/अधिकारियों को भाग लेने के लिए हम प्रोत्साहित करते हैं। प्रति वर्ष हम हिंदी पखवाड़ा बहुत ही उत्साह के साथ मनाते हैं जिसमें कर्मचारी / अधिकारी बढ़ चढ़कर भाग लेते हैं। हिंदी पखवाड़े के तहत आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को नक़द पुरस्कार के साथ ही पुरस्कार राशि के 20 प्रतिशत की हिंदी पुस्तकें देते हैं।

इस तरह से ज. ने. पत्तन का एक बल्क टर्मिनल से देश के पहले लैंडलॉर्ड पत्तन तक का 34 वर्ष का गौरवशाली सफर रहा है।

जवाहरलाल नेहरू पत्तन प्राधिकरण अस्पताल में कार्यरत श्री नारायण भोसले की बेटी सुश्री श्रेया नारायण भोसले ने वर्ष 2022-23 में सेंट मेरी विद्यालय जनेप प्राधिकरण से दसवीं कक्षा में 95% अंक पाकर पूरे उरण तालुका में प्रथम स्थान प्राप्त किया। इस उपलब्धि पर सुश्री श्रेया नारायण भोसले को सम्मानित करते हुए जनेप प्राधिकरण के उपाध्यक्ष श्री उन्मेष शरद वाघ, भा.रा.से.।

हमारी गृह पत्रिका 'अभिव्यक्ति' की ओर से भी सुश्री श्रेया नारायण भोसले का बहुत बहुत अभिनंदन और उज्जवल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाऐं।

हमारे पत्तन के बारे में कुछ रोचक जानकारी

जवाहरलाल नेहरू पत्तन प्राधिकरण के टर्मिनलों पर समुद्री गहराई (ड्राफ्ट) लगभग 15 मी. है। 370 मी. तक की लम्बाई के जलयानों का प्रहस्तन हमारे सभी टर्मिनलों (द्रव कार्गो टर्मिनल के सिवाय) पर हो सकता है। हमारे पत्तन के सभी टर्मिनलों के संबन्ध में कुछ महत्वपूर्ण जानकारी निम्नलिखित है :

टर्मिनल	एनएस एफटी	एनएसआई सीटी	जीटीआई सीटी	बीएम सीटी	एनएसआई जीटी	द्रव कार्गो टर्मिनल	एनएसडीटी (तटीय और उथला जल घाट)
घाट की लंबाई(मी.)	680	600	712	1000 (चरण-1)	330	300 मी. समुद्र की ओर, 280 मी. तट की ओर	तटीय - 250 उथला - 445
ड्राफ्ट (मी.)	15	15	15	15	15	15 मी. समुद्र की ओर, (ज्वारीय) 10.5 मी. तट की ओर (ज्वारीय)	तटीय - 7.7 उथला - 10
क्षमता (मिलियन टीईयू में)	0.9	1.2	1.8	2.4	0.8	7.2 (मिलियन टन)	7.2(मिलियन टन)
रीफर प्लग (सं.)	576	772	840	1620	336	-	-
आरएमक्यूसी क्रेनें (सं.)	06	08	10	12	04	-	-
आरटीजी क्रेनें (सं.)	27	29	36	36	16	-	-
आरएमजीसी क्रेनें (सं.)	03	03	03	04	-	-	-
कुल क्षेत्रफल-हेक्टेयर में	54.74	25.84	54.57	90	27	-	-

तटीय घाट - भारत सरकार ने तटीय नौवहन को बढ़ावा देने के लिए प्रत्येक महापत्तन में एक तटीय घाट का निर्माण करने का निर्णय लिया है। इन तटीय घाटों का विकास उथले हिस्से में किया जाएगा जहां बड़े अंतरराष्ट्रीय जलयान नहीं आ सकते। वहाँ तटीय जलयानों को लाया जाएगा और वहाँ कार्गो प्रहस्तन सीमाशुल्क तथा आप्रवास की औपचारिकताओं से मुक्त होगा। इस आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए जनेप प्राधिकरण ने 250 मी. लंबाई, 7.7 मी. ड्राफ्ट, 11 हैक्टेयर के बैक अप क्षेत्र और 2.5 मी. टन प्रति वर्ष क्षमता (1.5 मी. टन प्रति वर्ष तरल कार्गो और 1 मी. टन प्रति वर्ष सामान्य कार्गो) के तटीय घाट के विकास की योजना बनाई। तटीय घाट का कार्य 30 मार्च, 2021 को पूर्ण हो चुका है और इसका आरंभ 6 जुलाई, 2021 को हुआ। इस परियोजना से पत्तन संबंधी प्रलेखन और सीमाशुल्क औपचारिकताओं का समय बचेगा तथा व्यापार में वृद्धि होगी।

अतिरिक्त द्रव कार्गो घाट का विकास- द्रव कार्गो की बढ़ती मांग को ध्यान में रखते हुए जनेप प्राधिकरण ने हाल ही में, 4.5 मिलियन टन प्रतिवर्ष क्षमता का एक द्रव कार्गो घाट विकसित किया है। घाट पर एक तरफ 70,000 कुल टन भार और

दूसरी तरफ 25,000 कुल टन भार के जलयानों का एक साथ प्रहस्तन करने के लिए दुहरी सुविधा होगी। इस प्रकार जनेप प्राधिकरण में द्रव कार्गो प्रहस्तन क्षमता में 4.5 मिलियन टन की वृद्धि होगी। इससे न केवल जलयानों का प्रतीक्षा समय कम हो जाएगा जिससे आयातकों को भी फायदा होगा।

विशेष आर्थिक क्षेत्र भूखंड विकास - 277 हैक्टेयर का यह अपनी तरह का इकलौता बहु उत्पाद विशेष आर्थिक क्षेत्र है जो भारत के अग्रणी कंटेनर पत्तन, जवाहरलाल नेहरू पत्तन के बगल में स्थित है। भारत के माननीय प्रधान मंत्री द्वारा वर्ष 2014 में उद्घाटित यह औद्योगिक केंद्र भारत में निर्यात केंद्रित उद्योगों को बढ़ावा देने के लिए नवीनतम आधारभूत सुविधाओं के साथ बारीकी से परिकल्पित है। जनेप प्राधिकरण के निकट स्थित होने के कारण वैश्विक बाजारों तक पहुंच और विभिन्न साधनों द्वारा मजबूत संपर्क सुनिश्चित है। आने वाले नए विमानतल, डीएफसी रेल कॉरिडोर, ट्रान्स हार्बर रेल / सड़क सम्पर्क जैसी बहुविध आधारभूत संरचनाओं से इसकी समीपता; इसे एक निर्माण केंद्र के रूप में और आकर्षक बनाती है। जेएनपीए एसईजेड पत्तन आधारित औद्योगिकीकरण में एक नया प्रतिमान स्थापित करके पोत परिवहन मंत्रालय के 'पत्तन आधारित औद्योगिकीकरण' के सागरमाला कार्यक्रम के लक्ष्य को प्राप्त करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने के लिए प्रतिबद्ध है। यह विशेष आर्थिक क्षेत्र खाद्य प्रसंस्करण, अभियांत्रिकी, प्रसाधन, वाहन पुर्जे, दवा आदि जैसे उद्योगों के लिए निवेश का अवसर है। इसमें एक मुक्त व्यापार भंडारण क्षेत्र भी विकसित किया जा रहा है जिससे इस परियोजना का महत्व और बढ़ जाएगा। इसमे विशेष आर्थिक क्षेत्र से 57,000 रोजगार उत्पन्न होने और 4000 करोड़ का निवेश प्राप्त होने की संभावना है। जेएनपीए एसईजेड निवेशकों को 60 वर्ष के पट्टे पर भूखंड आबंटित कर रहा है। यह आबंटन पारदर्शी ई निविदा सह ई नीलामी प्रक्रिया द्वारा किया गया है।

वाढवण पत्तन : अरब सागर में मुंबई के उत्तर में वाढवण, नए पत्तन के विकास के लिए पूरी तरह आदर्श है जहां 4½ समुद्री मील की दूरी पर 20 मीटर की प्राकृतिक गहराई उपलब्ध है। जवाहरलाल नेहरू पत्तन प्राधिकरण ने वाढवण पत्तन के विकास के लिए महाराष्ट्र मैरीटाइम बोर्ड के साथ समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए। जनेप प्राधिकरण और महाराष्ट्र मैरीटाइम बोर्ड की क्रमशः 74% और 26% की हिस्सेदारी के साथ मैसर्स वाढवण पोर्ट प्रोजेक्ट लिमिटेड नामक विशेष उद्देश्य कंपनी की स्थापना हुई। भारतीय पत्तन अधिनियम 1908 के अंतर्गत वाढवण को महापत्तन के रूप में स्थापित करने के लिए अधिसूचना 19 फरवरी 2020 को प्रकाशित की गई।

पूरी तरह से विकसित हो जाने पर यह भारत का अपना महा पत्तन होगा जिसकी गहराई 18 मीटर और क्षमता 23.4 मिलियन टीईयू / 300 मी. टन प्रति वर्ष होगी। यह भारत से बाहर प्रहस्तित होने वाले यानांतरण कार्गो में कमी लाएगा, जो वर्तमान में 75% है।

इससे परिवहन लागत कम होगी और लगभग 12 किमी. की दूरी पर स्थिति मुंबई दिल्ली पश्चिमी रेलवे लाइन के माध्यम से देश के भीतरी इलाकों से संपर्क स्थापित होगा। मुंबई से दिल्ली राजमार्ग-8 की वाढवण से दूरी लगभग 35 किमी. है।

'आज़ादी का अमृत महोत्सव'-
एक अविस्मरणीय कार्यक्रम श्रृंखला

श्री.मुकुंद दि.डोंगरे
उप प्रबन्धक (विपणन)
जवाहरलाल नेहरू पोर्ट प्राधिकरण

पत्तन, पोत परिवहन और जलमार्ग मंत्रालय के निदेशानुसार जवाहरलाल नेहरू पत्तन प्राधिकरण ने भारत की आज़ादी के 75 वर्ष पूर्ण होने पर 'आज़ादी का अमृत महोत्सव' के अंतर्गत अप्रैल, 2021 से 15 अगस्त, 2023 तक विभिन्न कार्यक्रम/ गतिविधियों का आयोजन किया। इस पहल का उद्देश्य राष्ट्र के प्रत्येक नागरिक के हृदय में राष्ट्रध्वज के प्रति गर्व की भावना जाग्रत करना और कैसे वह राष्ट्रीयता का प्रतीक है, यह दर्शाना था। इस अवधि के दौरान जनेप प्राधिकरण द्वारा विभिन्न मुद्दों पर (सामाजिक उत्तरदायित्व और क्षेत्र के सामाजिक-आर्थिक विकास पर आधारित) पर कुल 150 कार्यक्रम/ गतिविधियाँ आयोजित की गईं। सभी कर्मचारियों, उनके आश्रितों और आस-पास के लोगों ने इन कार्यक्रमों में उत्साहपूर्वक हिस्सा लिया।

इस दौरान, छात्रों में पत्तन क्षेत्र के बारे में जागरूकता लाने के लिए, जनेप प्राधिकरण ने छात्रों के लिए शैक्षणिक भ्रमण भी आयोजित किया। प्राधिकरण ने नि:शुल्क स्वास्थ्य जाँच शिविर, जन-सामान्य और ट्रक चालकों के लिए (जो आमतौर पर इस प्रकार की सुविधाओं से वंचित रह जाते हैं) कोविड

19 टीकाकरण शिविर भी लगाए। पत्तन के निकट स्थित एक वृद्धाश्रम का दौरा भी आयोजित किया गया ताकि वहाँ पर आवश्यक सुविधाएँ प्रदान कर वहाँ जीवन स्तर सुधारा जा सके। साथ ही, पत्तन में पर्यावरणीय संतुलन बनाए रखने के लिए 'आज़ादी का अमृत महोत्सव' कार्यक्रम के तहत विभिन्न स्थानों पर वृक्षारोपण कार्यक्रम चलाए गए।

19 टीकाकरण शिविर भी लगाए। पत्तन के निकट स्थित एक वृद्धाश्रम का दौरा भी आयोजित किया गया ताकि वहाँ पर आवश्यक सुविधाएँ प्रदान कर वहाँ जीवन स्तर सुधारा जा सके। साथ ही, पत्तन में पर्यावरणीय संतुलन बनाए रखने के लिए 'आज़ादी का अमृत महोत्सव' कार्यक्रम के तहत विभिन्न स्थानों पर वृक्षारोपण कार्यक्रम चलाए गए इसके अतिरिक्त 'आज़ादी का अमृत महोत्सव' के अंतर्गत स्वच्छ भारत मिशन के लक्ष्यों को पूरा करने के लिए भी पत्तन ने विभिन्न गतिविधियाँ आयोजित की। अधिकारियों और कर्मचारियों ने पहले से चल रहे स्वच्छता पखवाड़ा के रूप में साफ-सफाई की मुहिमों में हिस्सा लिया। जनेप प्राधिकरण ने 'आज़ादी का अमृत महोत्सव' के अंतर्गत गायन (देश भक्ति गीत), भाषण, निबंध लेखन, अंताक्षरी और प्रश्नोत्तरी कार्यक्रमों का भी आयोजन किया।

'आज़ादी का अमृत महोत्सव' के अंतर्गत आयोजित कार्यक्रमों का 15 अगस्त, 2023 को धूम धाम से समापन हुआ।

"बंदरगाहों में स्वास्थ्य, सुरक्षा, गुणवत्ता और पर्यावरण का प्रबंधन"

जे एन पी ए में आई एस ओ 9001/45001/14001

डॉ. मिलिंद भोस्कर
चिकित्सा अधिकारी
ज. ने. प. प्राधिकरण अस्पताल

डॉ. मिलिंद भोस्कर, चिकित्सा अधिकारी, ने दिसंबर 2016 में व्यावसायिक सुरक्षा और स्वास्थ्य में ब्रिटिश कौंसिल की राष्ट्रीय परीक्षा बोर्ड से NEBOSH इंटरनेशनल जनरल सर्टिफिकेट कोर्स प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की है। NEBOSH ट्रेनिंग व्यावसायिक स्वास्थ्य और सुरक्षा के सिद्धांतों और व्यवहारों की व्यापक समझ और जानकारी प्रदान करता है।

किसी भी देश में व्यापारी सामान या माल के आयात-निर्यात के लिए बंदरगाह एक प्रमुख सुविधा प्रदान करता है। बंदरगाह में माल-सामान के आयात निर्यात का काम जहाजों द्वारा होता है। इस काम हेतु पत्तन में बहुत सारी गतिविधियाँ, जैसे शिप बर्थिंग, क्रेन द्वारा कंटेनर बॉक्स की लोडिंग-अनलोडिंग, पेट्रोलियम तेल के साथ अन्य रासायनिक उत्पादों का भंडारण, कंटेनर ट्रक्स और कन्टेनर रेल का यातायात, चौबीसों घंटे चलता रहता है। ये गतिविधियाँ पत्तन के व्यावसायिक वातावरण को एक खतरनाक स्वरुप प्रदान करती हैं। पत्तन के इस खतरनाक वातावरण में कर्मियों और श्रमिकों को इन गतिविधियों से जुड़े कार्यों में व्यावसायिक चोट और बीमारी या जोखिमों का सदैव सामना करना पड़ता है, जिस कारण से उनके स्वास्थ्य और सुरक्षा का मुद्दा बहुत ही महत्वपूर्ण बन जाता है DGFASLI (केन्द्रीय श्रम संस्थान, भारत सरकार श्रम एवं रोजगार मंत्रालय के अधीन संस्थान) ने वर्ष 2018 में भारत में स्थित विभिन्न पत्तनों में घटित दुर्घटनाओं का सांख्यिकीय विश्लेषण किया था, साथ ही 2023 राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद ऑडिट रिपोर्ट के अनुसार जे.एन.पी.ए पत्तन में दुर्घटनाओं की रिपोर्ट इस प्रकार थी।

व्यावसायिक स्वास्थ्य और सुरक्षा का उद्देश्य:

अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन (ILO) के अनुसार आज भी दुनिया भर में कार्य स्थल पर व्यावसायिक सुरक्षा या फिर पर्याप्त सुरक्षा संसाधनों की कमी के चलते, लाखों कर्मियों को व्यावसायिक चोटों से लेकर गंभीर व्यावसायिक बीमारियों के कारण मृत्यु का सामना भी करना पड़ता है। इससे निपटने के लिए हर एक व्यावसायिक संगठन द्वारा नैतिक, कानूनी, आर्थिक और सामाजिक स्तर पर विचार कर, अपने कार्य स्थल पर स्वास्थ्य और सुरक्षा का प्रबंधन करना अपेक्षित होता है। स्वास्थ्य और सुरक्षा के प्रबंधन में, व्यावसायिक संगठन के मुखिया के साथ बाकी सभी सदस्यों के साथ ही कर्मियों की भी मुख्य भूमिका होती है। संगठन के मुखिया को अपने संगठन में काम कर रहे हर एक कर्मी के लिए एक सुरक्षित कार्य स्थल, सुरक्षित यंत्र सामग्री और

वर्ष 2018 के लिए DGFASLI द्वारा दर्ज सांख्यिकीय रिपोर्ट के अनुसार	घटनाओं के प्रकार	जेएनपीटी बंदरगाह में हुई घटनाऐं
दर्ज करने योग्य दुर्घटनाओं का वर्गीकरण : प्रकार के अनुसार (2018)	ऊंचाई से गिरना	0
	वस्तुओं से, वस्तुएं टकराना	01
	वस्तुओं में फंसना	01
जनेप की राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद ऑडिट रिपोर्ट (2023)	नियर मिस घटना 2022	43
	प्रथम उपचार योग्य दुर्घटना 2022	01
	रिपोर्ट करने वाली दुर्घटनाएं	01
	घातक दुर्घटना	0

उपकरण (पी पी ई), काम की सुरक्षित प्रणाली की मानक संचालन प्रक्रिया (एस ओ पी), प्रशिक्षण, सूचना आदि मुहैया कराना शामिल होता है। संगठन के श्रमिकों, कर्मियों को भी कुछ जिम्मेदारियां निभानी होती हैं , जैसे उनकी खुद की सुरक्षा की उचित देखभाल, सुरक्षा के निर्देशों का योग्य अनुपालन, प्रदान किये गए सभी सुरक्षा उपकरणों का उपयोग, काम करते समय किसी खतरनाक स्थिति या फिर घटित व्यावसायिक चोटों की सूचना अपने वरिष्ठों तक पहुँचाना आदि शामिल होता है।

कार्य स्थल को सुरक्षित रखने के साथ ही, कर्मियों के स्वास्थ्य, सुरक्षा और उनके कल्याणकारी हितों को सुनिश्चित करना ही व्यावसायिक स्वास्थ्य और सुरक्षा प्रबंधन का मुख्य उद्देश्य है।

अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन (I L O) व्यावसायिक स्वास्थ्य और सुरक्षा के क्षेत्र में औद्योगिक कर्मचारियों के इन्हीं हितों की रक्षा के लिए क़ानून बनाने का मुख्य काम करती है। इस क़ानून के अनुसार, सभी व्यावसायिक संगठनों का मुख्य कर्तव्य यह सुनिश्चित करना है कि, संगठन के सारे कर्मचारी, संगठन के सभी संकटों और जोखिम भरी गतिविधियों से हर समय आगाह, सचेत और सुरक्षित रहें। कर्मचारियों को कार्य स्थल के सभी संकटों और जोखिमों के बारे में जानकारी मुहैया कराना, प्रशिक्षण देना, उनपर उचित निगरानी रखना, उन्हें व्यक्तिगत सुरक्षा उपकरण मुहैया कराने के साथ ही, स्वास्थ्य और सुरक्षा के मामलों पर परामर्श देना, उनके लिए कल्याणकारी योजनाऐं जैसे भोजनालय, पीने का पानी, शौचालय, चिकित्सीय सुविधा, कार्य स्थल परिवहन आदि सुविधाओं की जिम्मेदारियां शामिल होती हैं।

भारत में 1945 में श्रम और रोजगार मंत्रालय के अधीन महा निदेशालय, फैक्टरी सलाह सेवा और श्रम संस्थान की स्थापना की गई, जिसका मुख्य उद्देश्य कारखानों, खनन क्षेत्र, निर्माण क्षेत्र, असंगठित क्षेत्र, शिपिंग और बंदरगाहों में व्यावसायिक स्वास्थ्य और सुरक्षा के विषय पर राष्ट्रीय नीतियां बनाना, सलाह सेवा देना, निरीक्षण, प्रवर्तन कार्यवाई करना होता है। प्रमुख बंदरगाहों में गोदी मजदूर अधिनियम, 1986 और नियम 1990 के अंतर्गत गोदी कर्मचारियों के स्वास्थ्य, सुरक्षा और कल्याणकारी सुविधाओं पर विशेष निगरानी करना, दुर्घटनाओं की जांच, दोषी पाए जाने पर उचित कार्रवाई या मुकदमा चलाना, प्रशिक्षण और सुरक्षा सर्वेक्षण करना, बंदरगाहों के संचालकों को व्यावसायिक स्वास्थ्य और सुरक्षा के विषय पर सलाहकार सेवाएं प्रदान करना जैसे

काम होते हैं।

स्वास्थ्य, सुरक्षा, सेवा की गुणवत्ता और पर्यावरण की प्रबंधन प्रणाली के अंतरराष्ट्रीय मानक : ओशास और आई.एस.ओ:

ओशास (OHSAS) 18001 एक अंतर्राष्ट्रीय व्यावसायिक स्वास्थ्य और सुरक्षा प्रबंधन प्रणाली है, जो किसी भी व्यवसायिक संगठन के कार्य स्थल पर व्यावसायिक स्वास्थ्य, सुरक्षा को स्थापित और उसके प्रबंधन करने के लिए नियमावली बनाने और दिशानिर्देश देने का काम करती है। ओशास 18001 प्रबंधन प्रणाली को अपनाकर संगठन अपने कार्य स्थल पर व्यावसायिक खतरों और उसके जोखिमों को उजागर कर, उसकी रोकथाम, नियंत्रण कर, संगठन के कर्मियों तथा संगठन से जुड़े अन्य सभी भागीदारों को सुरक्षा प्रदान कर सकते हैं। ऐसे सभी संगठनों को ओशास 18001 प्रबंधन प्रणाली प्रमाण पत्र मिलता है। 2018 के बाद ओशास 18001 को आई एस ओ 45001 में शामिल किया गया। स्वास्थ्य और सुरक्षा प्रबंधन प्रणाली के साथ ही, संगठनों को अपने उत्पादों और सेवाओं को उनके ग्राहकों की आवश्यकताओं, अपेक्षाओं को पूरा कर गुणवत्ता में लगातार सुधार लाने के लिए, आई.एस.ओ (ISO) 9001 उत्पाद और सेवा गुणवत्ता प्रबंधन प्रणाली को अपनाना जरूरी होता है। इसके साथ ही संगठनों को अपने व्यवसाय की कार्य पद्धति से, खास कर रासायनिक प्रक्रियाओं से पर्यावरण, मनुष्य, प्राणी एवं जीव जंतु, पानी, हवा, भूमि को कोई हानि न पहुंचे, इसके लिए पर्यावरण जिम्मेदारियों के प्रबंधन हेतु आई.एस.ओ. (ISO 14001) पर्यावरण प्रबंधन प्रणाली को स्वीकारना भी जरूरी होता है।

एकीकृत प्रबंधन प्रणाली (आईएमएस IMS):

संगठन के व्यवसाय से जुड़े स्वास्थ्य, सुरक्षा, सेवा की गुणवत्ता और पर्यावरण के विषयों की जिम्मेदारियों को एकीकृत प्रबंधन प्रणाली (आईएमएस IMS) एक ढांचे में जोड़ती है, जिससे संगठन, बिना किसी उलझन और संघर्ष के बड़ी आसानी से इन सभी घटकों से जुड़े मुद्दों, उद्देश्य, उनकी संरचना की रूपरेखा, दस्तावेजों का प्रबंधन कर सकते हैं। जवाहरलाल नेहरू पत्तन ने भी अपने स्वास्थ्य, सुरक्षा, गुणवत्ता और पर्यावरण के उद्देश्यों और जिम्मेदारियों के प्रबंधन के लिए एकीकृत प्रबंधन प्रणाली को अपनाया है।

किसी भी संगठन की कार्यक्षमता, गुणवत्ता पूर्ण सेवा, स्वास्थ्य, सुरक्षित प्रक्रिया के लिए व्यवस्थित प्रबंधन प्रणाली की आवश्यकता को पूर्ण करने में ओशास, आई.एस.ओ, आई.एम.एस मददगार साबित होता है।

कविता: धरा पर जब धरो पग

श्रीमती भारती ठाकुर
लिपिक, जनेप अस्पताल

धरा पर जब धरो पग
तो धरा भी यह कह उठे,
आज कुछ वजन लगा
ये सोच के वो फिर झुम उठे।

मौसम थे आज़ादी वाले
तब धरा ये झुमी थी,
शौर्य और साहस वीरों के
देख देख इठलाई थी।

सर कटवाएं, फाँसी चढ गये,
अपनी लाशें बिछाई थी
बलिदानों की लगा के झड़ियाँ,
आजादी दिलाई थी।

मिले सपूत जो...
मिले सपूत जो भगत सिंह सा
तो धरा ये कह उठे,
आज कुछ वजन लगा
ये सोच के वो फिर झूम उठे।

वर्ण व्यवस्था, जातिभेद का
दलितों को अभिशाप लगा था
अछूत के छूने से मानव जब
उच्च वर्ण से भ्रष्ट हुआ था।

अछूतों को सम्मान दिलाने
एक मात्र वो वीर लड़ा था
मानवीय अधिकार से वंचित
दलितों का उत्थान किया था।

मिले मसीहा...
मिले मसीहा भीमराव सा
तो धरा ये कह उठे,
आज कुछ वजन लगा
ये सोच के वो फिर झूम उठे।

बाढ, प्रलय, आयी महामारी
चहु ओर कोहराम मचा था,
बह गये थे घरबार, गाँव , जब
सृष्टि का प्रकोप हुआ था।

मददगार बन तब मानव
बेबस के लिए भगवान हुआ था,
नींद, चैन सब त्याग चिकित्सक
महामारी से खूब लड़ा था।

कुछ कर जा तू...
कुछ कर जा दूजे की खातिर
तो धरा ये कह उठे,
आज कुछ वजन लगा
ये सोच के वो फिर झूम उठे।

धरा पर जब धरो पग तो
धरा भी यह कह उठे,
आज कुछ वजन लगा
ये सोच के वो फिर झूम उठे।

त्वमेव माता पिता त्वमेव

श्रीमती बेला मनोज आगलावे
वरिष्ठ सहायक – 12035
कार्मिक अनुभाग, प्रशासन विभाग

बेमतलब सी इस दुनिया में
वो ही मेरी शान है,
किसी शख्स के वजूद की
पिता ही पहली पहचान है।

एकल अभिभावक होना अपने आप में एक चुनौती है और यह चुनौती और बड़ी साबित हो सकती है अगर अभिभावक एक पुरुष है तो। एक महिला के लिए घर और बाहर की ज़िम्मेदारी निभा पाना कुछ हद तक आसान होता है किन्तु अगर बच्चों की ज़िम्मेदारी पुरुष पर हो तो यह काफी चुनौतीपूर्ण साबित होता है। हालांकि सिंगल फादर होना और बच्चे को पालना एक मुश्किल काम है, लेकिन भारतीय मर्द इसमें पीछे नहीं हैं। इसका जीता जागता उदाहरण हैं मेरे मित्र राहुल कान्त।

ये कहानी है लखनऊ निवासी राहुल और उसके प्यारे बेटे अंश की। राहुल और झेनाब मेरे कॉलेज के खास दोस्त थे। दोनों के घरों से जबर्दस्त विरोध होते हुए भी उन्होंने प्रेम विवाह कर लिया था। दोनों का अलग धर्म का होना ही शायद उनका गुनाह था। शादी के बाद राहुल और झेनाब लखनऊ छोड़कर मुंबई आ बसे। साल भर में ही उन्होंने अपनी नौकरी के साथ-साथ, घर गृहस्थी भी अच्छे से जमा ली थी। फिर 2 साल बाद अंश का जन्म हुआ। राहुल और झेनाब के लिए तो जैसे अंश ही सारा जहां था। बच्चे की देखभाल के लिए एक केयर टेकर घर में रख ली थी। जिसे वे बड़ी माँ कहते थे। बड़ी माँ अंश को दिन भर बड़े प्यार से संभाल लेती थी। हंसी – खुशी से दिन बीत रहे थे, किन्तु होनी को कौन टाल सकता था ? एक दिन ऑफिस जाते समय कार दुर्घटना में झेनाब चल बसी। उस समय अंश महज 8 महीने का ही था।

8 महीने के बेटे की परवरिश की ज़िम्मेदारी राहुल पर आ गई। लगभग सभी ने उसे दूसरी शादी के लिए कहा। लेकिन उसने किसी की नहीं सुनी। डेढ़ साल का होते होते अंश को सूखा रोग भी हो गया। इस बीमारी में शरीर सुख जाता है। वो ठीक से खड़ा भी नहीं हो पाता था। डॉक्टर ने रोज डेढ़ से दो घंटे मसाज करने की सलाह दी। अपने बच्चे के लिए राहुल ने स्वयं मसाज की ट्रेनिंग ली। रोज डेढ़ से दो घंटे राहुल अंश की मसाज कर, नहलाकर, खिला-पिला कर दफ्तर चले जाता था। हालांकि बड़ी माँ उसे यह सब करने के लिए मना करती कि वो ये खुद कर लेगी। लेकिन अंश के प्रति राहुल के प्यार को देखकर वो कुछ नहीं बोलती। भरी आँखों से पिता-पुत्र के प्रेम को निहारती रहती। बाकी समय बड़ी माँ अंश के साथ रहती।

दो साल के भीतर अंश चलने-फिरने लगा। लेकिन फिर भी उसे स्पेशल केयर की जरूरत थी। घर में ही उसकी पढ़ाई-लिखाई भी शुरु कर दी गई। राहुल ज्यादा से ज्याद वक्त अंश के साथ बिताने लगा था। आखिर अब वो ही तो उसके जीने का सहारा था। अंश ही उसके जीवन का सार था। उसको बेहतर परवरिश देने के लिए राहुल ने कुछ ऐसे प्रशिक्षण और कार्यशालाओं के माध्यम से ज्ञान भी प्राप्त किया, जिसमें बच्चों की देखभाल के तरीके सिखाए जाते हैं। राहुल का एक ही मकसद था, अंश के लिए जीना और उसका भविष्य बेहतर करना।

जैसे-जैसे समय बीतता गया, अंश और भी बड़ा होता गया। अब अंश के लिए उसके पापा राहुल ही सब कुछ थे। दोनों पिता-पुत्र कम, दोस्त ज्यादा लगते थे। आखिर दोनों का रिश्ता था ही ऐसा अद्भुत!

"बिना उसके, उसको न इक पल गंवारा था,
पिता ही साथी और पिता ही सहारा था।"

ठीक से खड़े भी ना रह सकने वाला अंश अब कामयाब एथलीट बन गया था। स्कूल से लेकर, कॉलेज में भी उसके एथलीट प्रदर्शन से उसका युनिवर्सिटी में चयन हो गया था। एक दिन वह भी आया जब उसको राष्ट्रीय स्तर पर चुन लिया गया। राहुल की हिम्मत, मेहनत और लगन कामयाब हुई। सही मायनों में उसने अपने बेटे को अपने पाँव पर खड़ा किया था। अंश को माँ और पिता दोनों का प्यार देकर नई मिसाल कायम की थी।

अंश अब 21 साल का हो चुका था। अपने बेटे के लिए राहुल ने एक सर्प्राइज़ पार्टी का आयोजन किया। यह पार्टी बेटे की हर कामयाबी और उसकी खुशी के लिए थी। शायद यही वह पल था जिसका अंश को इंतजार था। उसके पिता ने अपनी पूरी ज़िंदगी उसके लिए बिताई है, इसका अंश को पूरा एहसास था। उसने भरी महफिल में अपने पिता का शुक्रिया अदा किया।

दुनिया के सबसे बढ़िया पापा मेरे पापा.....
और मैं दुनिया का सबसे नसीबवान बेटा....
न लोरी, न पालने की डोरी का आनंद,
तुम्हारे हिस्से आया ....
घोड़ा बन पीठ पर अपनी, सारा जहां घुमाया ...
बाहों में तेरी बचपन बिताया,
वक्त की धूप में पकते रहे तुम,
मेरी ऊँगली पकड़, कदमों पर चलना तुमने सिखाया।
मेरी हर इच्छा, हर सपने को पूरा करने की,
सोच में तुम जीते हो.
पापा तुम मेरी माँ हो और मान हो,
तुम दुनिया में महान हो॥
तुम ही मेरे लिए रब का फरिश्ता हो...

माँ

श्रीमती शीतल गिरीश माली
लिपिक, कर्म. सं. 11970
प्रशासन (विपणन अनुभाग)

एक ऐसी मूरत हो तुम,कि माँ
बोलते ही सारा सकून मिल जाता है
सब दु:ख भूल जाती हूँ मैं ।

कहने के लिए तो अभी
भी मैं तुम्हारी दुलारी हूँ
लेकिन तुम मेरी
दुनियाँ हो माँ ।

नौ मास कितनी तकलीफें
सही तुमने मेरे लिए,
और कहती हो की
मेरे वजह से तुम
बन गयी माँ ।

जग में सबसे सुंदर
तुम हो माँ,
बहुत सुंदर हो तुम,
पर कहती हो
कि मैं सुंदर हूँ ।

चलना पढ़ना, आत्मनिर्भर होना
सब कुछ तो तुमने सिखाया
और कहती हो,
कि मैं पास हो गयी।

कुछ मोल नहीं
तेरे अहसनों का माँ,
कैसे चुकाऊँ,

अब एक बात बताऊँ माँ,
अगर भगवान मिले तुम्हें, तो कहना
कि अगले जनम में,
तुम बनोगी मेरी बेटी,
और मैं तुम्हारी माँ ।

पुस्तक समीक्षा : 'अग्नि की उड़ान'

- श्रीमती भारती ठाकुर
लिपिक, जनेप अस्पताल

भारत के पूर्व राष्ट्रपति, मिसाईल मैन डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम का आत्मचरित्र 'अग्नि की उड़ान' में सुवर्णित है। यह पुस्तक डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम द्वारा (सहायक - अरुण तिवारी) लिखी गई पुस्तक 'The Wings of Fire' का अनुवाद है। इस पुस्तक में उन्होंने अपनी जिंदगी के उतार-चढ़ावों के बारे में लिखा है।

इसमें भारत के प्रौद्योगिकी क्षेत्र और वैश्विक हथियारों के होड़ के विज्ञान की कहानी है। अग्नि, पृथ्वी, आकाश, त्रिशूल और नाग मिसाइलों के विकास की कहानी है। जिसने अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भारत को मिसाइल-संपन्न राष्ट्र के रूप में जगह दिलाई और तकनीक एवं रक्षा के क्षेत्र में भारत को आत्मनिर्भर बनाया । इसमें एस.एल.वी.3 के प्रायोगिक उड़ान की विफलता और एस.एल.वी.3 (उपग्रह प्रक्षेपक) की सफलता की भी कहानी है।

यह पुस्तक डा. कलाम के व्यक्तित्व का आईना है । इस पुस्तक में कुरान की कथाएं हैं कुछ ऐसे किस्से हैं, जो इस पुस्तक को रोचक बनाते हैं । रामेश्वरम के पवित्र शिवालय में होने वाली पूजा, प्रार्थना और मस्जिद में पढ़े जाने वाली नमाज, दोनों की प्रार्थनाएं एक होकर ब्रह्मांड में विलीन हो जाती हैं, इस जैसे कितने ही विचार हैं जो उनके सर्वधर्म समभाव तथा मानवीयता का परिचय कराते हैं। अपने माता पिता के प्रति प्रेम और कृतज्ञता का भाव, उनके प्रति अपना दायित्व सही ढंग से ना निभा पाने के अफसोस का जिक्र उनके नैतिक मूल्यों की महत्वता का परिचय कराती हैं।

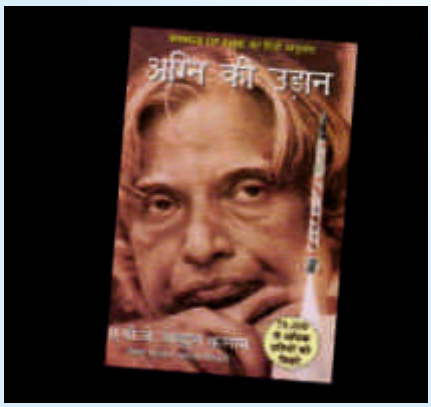

इसमें डा. कलाम का रामेश्वरम से लेकर दिल्ली तक का सफर है। एक अखबार बाँटने वाले लड़के का देश के राष्ट्रपति बनने तक का सफर है। इस सफर में ऐसे कितने ही पड़ाव आए जब उन्हें लगा की अब आगे बढ़ना संभव नहीं है। मगर परकाष्ठा से किए गए प्रयास इंसान को सफलता के शिखर पर ले ही जाते हैं। इस पुस्तक द्वारा उन्होंने अपनी जिंदगी के तमाम पहलुओं को स्पष्ट रूप से सामने रखा है।

भारत के पूर्व राष्ट्रपति डा. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम के संघर्ष की ये कहानी युवाओं को जरूर पढ़नी चाहिए। इस पुस्तक में प्रकट किए गये उनके विचार, उनकी सोच, असफलता को सफलता में तबदील करने के लिये किए गये अथक परिश्रम और उनके नैतिक मूल्य; युवाओं के विचारों को अवश्य ही सकारात्मकता से प्रेरित कर सकते हैं । पुस्तक का लेखन सरल, सीधा, भावनात्मक, मन को झकझोर देने वाला है और पाठक को एक नई दुनिया में ले जाता है।

बचपन

- श्रीमती अंजली भोस्कर
मुंबई

आज हर लम्हा जिंदगी का
बीता बचपन याद करता है
जो पल गुजारे माँ की गोद में
वो सुनहरे पल याद करता है।

माँ का हाथ पकड़ के चलना हो
या पिता के कंधे पर बैठना
हर वो बात आज उनकी
याद आते ही दिल भर आता है।

दोस्तों के साथ खेलना कूदना
बारिश के मौसम में भीगना
कागज़ की कश्ती बनाकर
पानी में छोड़ना याद आता है।

बचपन में ना कोई चिंता, न डर था
ना हमें कोई परेशानी सताती थी
हर वक्त एक धुन में मस्त रहते थे
आज वो धुन भी याद आती है।

गुजरा हुआ बचपन का लम्हा
हाथों की मुठ्ठी में बंद करके
क्या ले जा सकेंगे बुढ़ापे तक
ये सोचते ही रोंगटे खड़े हो जाते हैं।

बचपन को याद करने में भी
एक अलग सा मजा आता है
जिंदगी का एक अहम हिस्सा
ताउम्र यादों में रहता है !!...

निसर्ग की गोद में स्थित मेरा कार्यालयीन परिसर

सौ. प्राजक्ता पराग म्हात्रे
कर्मचारी संख्या – 12308
प्रशासन विभाग

सुंदर-विशाल समुद्र तट पर खड़ा निसर्ग सम्पन्न हरा भरा एक द्वीप है। यकीन मानिये उस द्वीप पर निसर्ग के सानिध्य में हमारा जवाहरलाल नेहरू पत्तन प्राधिकरण है, जो आयात-निर्यात सेवा कार्य में दुनिया भर में अग्रणी है। मैं खुद को बहुत खुशनसीब समझती हूँ कि वही मेरा कार्यक्षेत्र है।

कार्यालय में जाने के लिए जब उरण स्थित मेरे घर से निकलती हूँ और जब जनेप का परिसर आता है तब दूर तक फैली हरियाली नजर खींच लेती है, ठंडी हवा के झोंके मन प्रसन्न करते हैं और एक पुराना गीत याद आता है :

ये हरियाली और ये रास्ता
ये हरियाली और ये रास्ता
इन राहों पर तेरा (जनेप) मेरा
जनम जनम का वास्ता ॥

अगस्त-सितंबर के महिने में इन सड़कों के दोनों तरफ विविध प्रकार के जंगली फूल खिलते हैं, जिससे ऐसा महसूस होता है कि हम काम पर नहीं, कहीं सुन्दर जगह पर टहलने आये हैं। समुद्री नमक के छोटे छोटे पर्बत जैसे ढेर उस हरियाली की सुंदरता और बढाते हैं। सड़क किनारे जो बबूल के पेड़ हैं उन पर बया पक्षी (वीवरबर्ड) के घोंसले हैं जिनमें पंछियों की किलबिलाहट सुनाई देती है और माता-पिता रूपी पंछी अपने बच्चों की परवरिश मे दाना-पानी के लिये भाग-दौड़ करते दिखाई देते हैं।

हरियाली के साथ विविध प्रकार के पंछी टहलते हुए दिखते हैं और बिजली की तार पर भी रोजाना बैठे दिखते हैं। कुछ पंछी नियमित रुप से दिखते हैं। उनको देखकर ऐसा लगता है कि यह हमें देखकर मुस्कुराकर शुभ प्रभात कह रहे हैं। चतुर तितलियाँ भी मजे से इधर-उधर मंडराती हुई, देखकर बचपन याद आता है। पुल के उपर से दोनो तरफ दूर तक सुंदर दृश्य दिखाई देता है। पुल के उपर से एक तरफ खाड़ी के पानी में जल क्रीड़ा कर रहे पंछी भी दिखाई देते हैं और उधर ही माता रत्नेश्वरी देवी के सुंदर मन्दिर का दर्शन होता है जिससे मन में श्रद्धा जागती है और प्रसन्नता महसूस होती है। टैंक फार्म के सड़क के किनारे

कुछ बड़े पेड़ हैं जिससे टैंक फार्म का परिसर सुंदर दिखता है। पितमोहर के पीले फूल, गुलमोहर के आकर्षक लाल फूल, विदेशी बबूल के पीले फूल इन सड़कों की शान हैं। इन्हीं रास्तों पर विलायती इमली के बहुत पेड़ हैं जिन पर लाल इमलियाँ लटकती हुई देखकर मुहँ में पानी आता है और जी करता है बचपन की तरह पत्थर मार के ये इमलियाँ खाने का आनंद लें ।

आगे जाकर जब हमारे प्रशासन भवन की ओर छोटा सा सफर चालू होता है जोकि एक छोटे से टीले पर स्थित है, वह परिसर अत्यंत मनोहर एवं रमणीय है। परिसर के एक ओर घना जंगल है तो दूसरी ओर नीचे दिखने वाला विशाल समुंदर और उसके किनारे स्थित हमारा जनेप पोर्ट का नजारा। सड़क के दोनों तरफ सुंदर बगीचे के फूल कतार में हमारा स्वागत करते हैं। यहीं पर अपनी अपनी ऋतु में शाल्मली (काटेसावर), अमलतास (बहावा), बोगनवेल जैसे फूल मुस्कुराते हुए खिलते रहते हैं । प्रशासन भवन के गेट से अंदर जाने पर लॉन वाले बगीचे को देखकर मन तरोताजा हो जाता है। हमारा प्रशासन भवन मानो हिल स्टेशन पर बनी, एक सुंदर नैसर्गिकता से सजी धजी वास्तु है। हमारे लिये यह मन्दिर है। भवन के अंदर भी खुली जगह में सजावट कर और कर्मचारियों को निसर्ग का साथ बनाये रखने हेतु गमले में पेड़-पौधे रखकर, हरियाली फैलायी गई है जिससे मन प्रसन्न रहता है। हमारे जनेप प्राधिकरण की सभी इमारतों में जैसे अस्पताल, पीओसी और अन्य भवनों में भी यह व्यवस्था की गयी है । छुट्टी होने पर शाम को जब प्रशासन भवन से बाहर निकलते हैं तब सामने ही समुंदर में सूरज अपना सुंदर सुनहरा रंग बिखेरता शुभकामनाएँ देता है। हवा की ताजा लहरें सारी थकान मिटाती हैं।

हमारे प्रशिक्षण केंद्र की ओर जाने वाले टीले के रास्ते का नज़ारा ऐसा है कि उस नज़ारे को आँखों में कैद कर लें। एक तरफ हरियाली भरा बगीचा है और उस बगीचे के किनारे नारियल और पाम ट्री के पेड़ों की झालर है | इसके किनारे पर अमलतास है जिस पर मई के महिने में पीले फूलों के झूमर आकर्षित करते हैं। दूसरी तरफ दूर तक फैला समुंदर अपने कंधों पर जनेप के कार्यक्षेत्र को लेकर खड़ा है। मोरा, पाणजे गाँव के सुंदर पर्वत दिखाई देते हैं, मुंबई और उरण शहर की शानदार इमारतों का दर्शन भी यहाँ से होता है। नीचे पोर्ट जाने वाले रास्ते के नजदीक जो बैक वॉटर है वहाँ जनेप व्यवस्थापन ने गोलाकार वॉटर गार्डन बनाया है, उस के सामने से जब मालगाड़ी जाती है तब बहुत सुन्दर नजारा दिखाई देता है। मोरा बंदर मे लगने वाले मछुवारों के मचवे (छोटी नाव), नौकाऐं धीरे धीरे चलते दिखते हैं। यह सब नजारा देखने के लिये एक छोटी खुली कुटिया जनेप प्राधिकरण ने बनायी है, जहाँ ठण्डी हवा के झोंके मन की सारी नकारात्मकता दूर भगाते हैं।

हमारे प्रशिक्षण केंद्र और अतिथि गृह के परिसर में सुन्दर फूलों से भरा हराभरा बगीचा बना हुआ है कि वहाँ से जाने का मन नहीं करता। प्रशिक्षण गृह से अतिथि गृह जाने वाले रास्ते पर जाते समय, ऐसा प्रतीत होता है कि हम जंगल का सफर कर रहे हैं। बड़े घने पेड़ रास्ते के दोनों तरफ फैले हुए हैं, न जाने उनमें कितने अनगिनत पंछी, प्राणियों, जीव के घर बस रहे होंगे।

आगे जाकर हमारे जनेप के परिसर में भगवान शिवजी का स्वयंभू मंदिर है जिसके दर्शन पाकर मन प्रसन्न होता है। यह मन्दिर जंगल में ही स्थित है। हमारे पोर्ट में भी इतने वाहनों की आवक-जावक रहती है फिर भी निसर्ग के घटकों को अधिक से अधिक संभाल के रखा हुआ है। पोर्ट पूरी तरह से समुंदर किनारे है अत: खुली हवा से यह परिसर समृद्ध है। समुंदर में लगने वाले

बड़े बड़े जहाज, क्रेन, कन्टेनर आदि इस नैसर्गिक सुंदर परिसर में अधिक सुंदर दिखाई देते हैं।

हमारा अस्पताल और टाउनशिप (नगरक्षेत्र) भी पेड़-पौधों और बगीचे से हराभरा है। अन्य जगहों की तुलना में हमारा जनेप का परिसर, शुद्ध हवा से परिपूर्ण है जो कि हमारे आरोग्य के लिए, हमारा मन प्रसन्न रखने के लिये मदद करता है। हमारा पोर्ट नैसर्गिक रूप से एक महत्वपूर्ण संपत्ति है।

हमारा परिसर पहले के न्हावा-शेवा और कुछ अन्य छोटे गाँवो में स्थित है। हम यह भी भूल नहीं सकते कि उन्ही गावों के स्थलांतर के वजह से, इतना बड़ा पोर्ट प्रोजेक्ट आज न्हावा-शेवा में दुनिया की आँखों के सामने खड़ा है। हर मौसम में यह परिसर उत्साही वातावरण बनाए रखता है। यह हराभरा निसर्ग हमारे जनेप को मिला एक वरदान है।

हमारे सभी अधिकारी और कर्मचारी भी निसर्ग प्रेमी हैं, निसर्ग का सम्मान करके कार्य की योजनाऐं बनती हैं। पर्यावरण दिवस और अन्य अवसरों पर वृक्षारोपण कार्यक्रम के माध्यम से नये पौधे लगाये जाते हैं। उपर्युक्त कारणों से ही यह पोर्ट अभी तक हरा भरा है और ऐसा ही भविष्य में हमेशा रहे, यह आशा है।

वो महिला दिवस मनाती है

- श्रीमती बेला मनोज आगलावे
वरिष्ठ सहायक – 12035
कार्मिक अनुभाग, प्रशासन विभाग

8 मार्च के एक दिन में महान वह बन जाती है,
वाहवाही, पुरस्कार और सम्मान वह पाती है,
आप ही हस्ती होती है, तो आप ही जश्न मनाती है,
छोटी-छोटी खुशियों में खुशियाँ वह मनाती है,...
वह महिला दिवस मनाती है॥

माँ-बहन,बेटी-बहू, पत्नी-सहेली, किरदार कई निभाती है,
कभी देवी पूजी जाती है तो कभी बाजार लुटायी
जाती है। अपनों से ही छली जाती है,
पीढ़ी की जननी वह, वही दुतकारी जाती है,
भक्षकों की नजरों से सहमी-सहमी जीती जाती है...
वह महिला दिवस मनाती है।

दिल में मोहब्बत बनकर बसती है
चाँद तारों के आँचलवाली जन्नत लगती है।
हर दर्द ए गम को सीने में छुपाती है,
लबों पे कभी ना हसरत लाती है।
वह महिला दिवस मनाती है।

डिग्रियाँ ढेर लेती है, खुद का स्थान वह बनाती है,
राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री आदि मंत्री पद तो वह पाती है,
33 प्रतिशत के लिए अभी भी गुहार वह लगाती है,
वह महिला दिवस मनाती है।

नौ रंगों में सजती है, एक सावित्री को पूजती है,
ना ही उस सावित्री को भूल पाती है,
अन्तरिक्ष तक पहुँच चुकी है,
उन्मुक्त पंख फैलाकर उड़ना चाहती है

सीमा पर दुश्मन से लोहा लेती है, घर में चूड़ी खनकाती है ,
रूढ़ि परम्पराओं से बाहर निकल नहीं पाती है,
वह महिला दिवस मनाती है।

जिंदगी से बेहद हसीं हकीकत है वह ,
सब्र की मिसाल, हर रिश्ते की ताकत
प्रेम-प्यार, विश्वास की मूरत है वह,
आत्मसम्मान की अभिलाषी है,
इन्सानों की दुनिया में इंसानियत वह चाहती है,
वह महिला दिवस मनाती है॥

विगत 75 वर्षों में राजभाषा हिंदी की विकास यात्रा

श्री संतोष भिवा परब
सहायक प्रबंधक
कर्मचारी क्र.10716

हिंदी खड़ी बोली के जन्मदाता भारतेंदु हरिश्चंद्र माने जाते हैं। जिन्होंने हिंदी के महत्व को प्रतिपादित करते हुए कहा था – "निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल "। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने कहा था – " जो भाषा भारत के दिलों पर राज करती है, वह भाषा हिंदी है " । भारतीय संस्कृति अनेक भाषाओं से जनित मुकुट के समान है और हिंदी उसमें मुकुटमणि के रूप में स्थापित है।

हिंदी में उच्च कोटि का साहित्य और व्यापक शब्द-भंडार है । हिंदी देश की सामाजिक, सांस्कृतिक परंपराओं के निर्वहन की क्षमता रखती है । हिंदी को समझना और बोलना आसान है। वह आसानी से सीखी जा सकती है । उसमें लेखन के अनुरूप उच्चारण और उच्चारण के अनुरूप लेखन की विशिष्टता है। उसमें सभी को जोड़ने तथा परंपरा, परिवेश और लोक रंग में रंगने का सामर्थ्य है । विश्व की सर्वाधिक वैज्ञानिक लिपि, 'देवनागरी', उसकी लिपि है। हिंदी ने प्रौद्योगिकी, संचार क्रांति, डिजिटलीकरण की सभी अधुनातन प्रवृत्तियों को बड़ी सुगमतापूर्वक आत्मसात किया है। हिंदी राजभाषा, संपर्क भाषा, विश्वभाषा, व्यवहार और कार्य की भाषा है। हिंदी को देश की प्रथम, द्वितीय या तीसरी भाषा के रूप में प्रयोग करने वालों की संख्या मिलाई जाए तो तकरीबन 80% भारतीय हिंदी जानते हैं । इसीलिए, अखिल भारतीय स्तर पर संपर्क, कारोबार, ज्ञान-विज्ञान के बेहतर प्रसार हेतु हिंदी से बेहतर कोई भाषा नहीं हो सकती है, यह बात विगत 75 वर्षों की राजभाषा की विकास यात्रा देखकर हम बखूबी समझ जाएंगे।

14 सितंबर, 1949 को भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343 से अनुच्छेद 351 के रूप में जो कानून बना, उसमें हिंदी को राजभाषा का दर्जा दिया गया तथा राज्यों को अपने यहां होने वाले सरकारी कामकाज के लिए कोई भी भाषा चुनने का अधिकार भी दिया गया । इसी भाषाई राजनीति की वजह से हिंदी राष्ट्रभाषा नहीं बन सकी।

18 जनवरी, 1968 को देश के संसद के दोनों सदनों में राजभाषा प्रस्ताव को पारित किया गया। राजभाषा संकल्प के अनुसार, भारतीय संघ द्वारा आधिकारिक उद्देश्य के लिए हिंदी भाषा का उपयोग बढ़ाने के लिए एक व्यापक कार्यक्रम का प्रस्ताव पारित हुआ था। वही हिंदी को बढ़ावा देने के लिए सरकार की विभिन्न योजनाओं में हिंदी भाषा, आशुलिपि और टाइपिंग में प्रशिक्षण प्रदान करने के लिए हिंदी प्रशिक्षण योजना को भी शामिल किया गया। देश में प्रधानमंत्री की अध्यक्षता में केंद्रीय समिति का गठन किया गया। इसके तहत देश भर में केंद्रीय हिंदी संस्थान खोले गए। राजभाषा संकल्प के प्रमुख बिंदु थे - संघ द्वारा हिंदी का अधिकाधिक उपयोग, त्रिभाषा सूत्र केंद्र सरकार में विभिन्न पदों पर उम्मीदवारों के चयन के लिए हिंदी और अंग्रेजी का अनिवार्य ज्ञान और आठवीं अनुसूची की सभी भाषाओं को अखिल भारतीय केंद्रीय सेवा परीक्षा के वैकल्पिक माध्यम के रूप में अनुमति।

इससे पहले, 1963 में राजभाषा अधिनियम पारित किया गया, जिसके अनुसार संकल्प, नियम, सामान्य

आदेश, सूचनाएं, प्रेस विज्ञप्ति, प्रशासनिक और अन्य रिपोर्ट, लाइसेंस, निविदा जैसे उद्देश्यों में अंग्रेजी और हिंदी दोनों भाषाओं का उपयोग किया जाएगा। राजभाषा विभाग प्रतिवर्ष केंद्र सरकार के सभी कार्यालयों में राजभाषा कार्यान्वयन के लिए वार्षिक कार्यक्रम तैयार करता है और कार्यों की प्रगति की वार्षिक मूल्यांकन रिपोर्ट संसद के दोनों पटलों पर रखी जाती है।

गृह मंत्रालय ने स्मृति आधारित कंप्यूटर सॉफ्टवेयर, स्वदेशी टूल "कंठस्थ" को अधिक लोकप्रिय बनाया। विभिन्न सरकारी संगठनों के हिंदी अधिकारियों को ई-प्रशिक्षण देकर प्रोत्साहित भी किया गया। स्वयं हिंदी भाषा सीखने के लिए बनाऐ गये 'लीला' हिंदी ऐप के जरिए से अंग्रेजी के अलावा 14 अन्य भारतीय भाषाओं से स्वयं हिंदी सीखी जा सकती है । केंद्रीय संस्थाओं की गृह पत्रिकाओं को ई-पत्रिका पुस्तकालय प्लेटफार्म से हिंदी में पढ़ा जा सकता है। ई-महाशब्दकोश मोबाइल ऐप तथा ई-सरल हिंदी वाक्यकोश मोबाइल ऐप भी उपलब्ध कराए गए हैं। इनके प्रयोग से हिंदी में टिप्पणी लिखने में बहुत सुविधा हो रही है । हिंदी प्रयोग बढ़ाने के लिए बारह 'प्र' की रूपरेखा तैयार की गई है। उसमें महत्वपूर्ण स्तंभ हैं – प्रेरणा, प्रोत्साहन, प्रेम, पुरस्कार, प्रशिक्षण, प्रयोग, प्रचार, प्रसार, प्रबंधन, प्रोन्नति, प्रतिबद्धता और प्रयास।

उपर्युक्त सुविधाओं के कारण सरकारी कामकाज में हिंदी बढ़ती गई तथा आम जनता ने हिंदी में काम करना सीख लिया। भारत में 70 करोड़ से ज्यादा लोग इंटरनेट उपयोग करते हैं। 2021 में, हिंदी में इंटरनेट का उपयोग करने वालों ने अंग्रेजी को पछाड़ दिया। गूगल के अनुसार, हिंदी में डिजिटल सामग्री पढ़ने वाले हर वर्ष तेज दर से बढ़ रहे हैं। सच्चाई यही है कि हिंदी जानने, समझने और बोलने वालों की बढ़ती संख्या के चलते अब माइक्रोसॉफ्ट, गूगल, आईबीएम, एप्पल और ओरेकल जैसी कंपनियां हिंदी को डिजिटल सुविधाओं से सुसज्जित करने तथा हिंदी में उपयोगी विषय सामग्री तैयार करने जैसे कार्यों पर अच्छा-खासा पैसा और कार्यबल लगा रही हैं। उपयोगकर्ताओं की रूचि के अनुसार इंटरनेट पर हिंदी टंकण, बोलकर टाइप करने, लिखा हुआ सुनने, अनुवाद करने, शब्दकोश, विश्वकोश, हिंदी सॉफ्टवेयर आदि तमाम सुविधाओं से संबंधित एप्लीकेशन्स की भरमार हो गई है । विभिन्न यांत्रिक उपकरणों पर आभासी सहायक और वर्चुअल असिस्टेंट की सहायता से काम करने से भी हिंदी का माध्यम निरंतर विस्तार पा रहा है। अमेज़न की अलेक्सा हो या गूगल की गूगल असिस्टेंट, माइक्रोसॉफ्ट की कोर्टाना, एप्पल की सीरी आदि; इन सभी आभासी सहायकों से हिंदी भाषा में मार्गदर्शन एवं सहयोग लिया जा सकता है।

इंटरनेट पर गूगल के साथ-साथ खोज (सर्च) की सुविधा हिंदी में भी उपलब्ध है। कई कंपनियां अपनी वेब पृष्ठ हिंदी में उपलब्ध करा रही हैं। आज हिंदी के लगभग सभी प्रतिष्ठित समाचार-पत्र तथा दुनिया के जाने-माने रेडियो और टीवी चैनल अपने डिजिटल अवतार में हिंदी भाषा को अपना चुके हैं और लोकप्रिय हो रहे हैं। किसी भी चैनल को हिंदी भाषा में देखने की सुविधा डीटीएच पहले ही ला चुका है। टीवी के कई विदेशी चैनल पूरी तरह से हिंदी में ही कार्यक्रम प्रसारित कर रहे हैं। आज कई ऐसी हिंदी वेबसाइट आ गई हैं जो साहित्य की विभिन्न विधाओं को समर्पित हैं। कथा, कविता, पत्रकारिता अथवा महिला केन्द्रित अथवा किसी विशिष्ट विषय पर आधारित ढेर सारी हिंदी वेबसाइट्स आज इंटरनेट पर उपलब्ध हैं । डिजिटल पटल पर आयोजित होने वाली बैठकों, गोष्ठियों, परिचर्चाओं एवं कवि सम्मेलनों के माध्यम से दुनिया भर के हिंदी प्रेमी संपर्क स्थापित कर रहे हैं। हिंदी को यूनिकोड में लिखने की सुविधा से हिंदी ने इंटरनेट पर अपनी धाकड़ उपस्थिति दर्ज कराई है। ओटीटी प्लेटफॉर्म मनोरंजन का

बड़ा साधन बने हैं, जहाँ पर करीबन 80 ओटीटी प्लेटफॉमों से हिंदी गीत और संगीत, धारावाहिक, वेब श्रंखलाओं और फिल्मों से लोगों का मनोरंजन हो रहा है। दूसरी ओर किंडल, अमेजॉन आदि पर हिंदी साहित्य सबके घर-घर तक पहुंचा है। फेसबुक, ट्विटर, इंस्टाग्राम, व्हाट्सएप आदि के उपयोगकर्ता हिंदी का प्रयोग कर रहे हैं। यूट्यूब वीडियो देखने वाले 93% भारतीय इन वीडियोज़ को हिंदी में देखना पसंद करते हैं।

वर्तमान में, भारत में लगभग 580 ऐसे हिंदी दैनिक समाचार पत्र हैं, जिनकी कुल 8 करोड़ प्रतियां छापी जाती हैं। वहीं अंग्रेजी में 170 समाचार पत्र हैं, उनकी कुल चार करोड़ प्रतियां छापी जाती हैं। शीर्ष दस हिंदी दैनिक समाचार पत्रों की पाठक संख्या 19 करोड़ होने का अनुमान है जो शीर्ष दस अंग्रेजी दैनिक समाचार पत्रों से लगभग 5 गुना अधिक है।

विगत 75 वर्षों में हिंदी ने जनमानस में अपनी व्यापक पैठ बनाई है। उसके इस व्यापक स्वरूप के दर्शन कला, संस्कृति, फिल्म, टीवी और संचार के तमाम इलाकों में उसकी बढ़ती धमक में किए जा सकते हैं। लेकिन, इस बढ़ते कदम में अंग्रेजी मुख्य बाधा है। अंग्रेजी का बढ़ता आक्रमण, स्तरहीन अनुवाद, वैश्विक साहित्य की अनुपलब्धता, मानक हिंदी की जरूरत, दुनिया भर के विदेशी विद्यालयों में हिंदी पढ़ने वालों की नगण्य संख्या, अंग्रेजी बोलने वालों को हाईप्रोफाइल मानना, रोजगार परक हिंदी की कमी, हिंदी फ़ॉन्ट की एक दूसरे में बदलते समय में आने वाली गड़बड़ी, दक्षिण भारतीय राज्यों में हिंदी का विरोध, हिंदी की विलुप्त होती बोलियां भाषाएँ, हिंदी में व्यावसायिक, इंजीनियरिंग, चिकित्सा, प्रबंधन, विधि एवं न्याय आदि शिक्षा का अभाव, हिंदी में मूल कार्य न करके उसके अनुवाद कर प्रस्तुत करना, भूमंडलीकरण और बाजार का प्रभाव आदि अनेक समस्याएं हिंदी के प्रसार में बाधक हैं। इसके बावजूद "भाषा बहता नीर" के सिद्धांत का पालन करते हुए हिंदी तमाम अवरोधों, बाधाओं को पार करते हुए अपनी पहुंच का दायरा पूरे विश्व भर में बढ़ा रही है। व्यापक स्वीकार्यता, सतत् परिमार्जन एवं परिवर्धन और नवीन शब्दावली के निर्माण एवं प्रयोग से पोषण पाकर ही हिंदी जीवन एवं लोकव्यवहार की भाषा बनी है। राष्ट्र को एक सूत्र में पिरोने का काम हिंदी ने बखूबी निभाया है। आज वह संयुक्त राष्ट्र संघ की सातवीं आधिकारिक भाषा बनने जा रही है। हिंदी विश्व की तीसरी सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा है। हमारे देश में, अपनी प्राथमिक भाषा के रूप में अंग्रेजी बोलने वालों की संख्या सिर्फ 0.02 प्रतिशत है। वही हिंदी करीब 80% आबादी तक पहुंची है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी ने सरकारी कामकाज में हिंदी को बढ़ावा देने का अभियान चलाया है। तब से यह उम्मीद जग रही है कि हिंदी अंग्रेजी की दासी ना होकर एक महारानी के रुप में अपना अस्तित्व स्थापित करेगी।

भाषा महज संपर्क और सवांद का जरिया भर नहीं होता। यह किसी देश के संस्कार और संस्कृति का आधार भी होता है। इसलिए अगर विगत 75 सालों में भी हिंदी देश की राष्ट्रभाषा नहीं बन सकी, तो यह महज विभिन्न सरकारों और उनके प्रशासनिक अमलों की असफलता नहीं है बल्कि एक समाज के नाते इसमें हम सबकी असफलता सम्मिलित है। इसलिए हम सबको मिलकर यह प्रण करना होगा कि देश की स्वतंत्रता की 100 वीं वर्षगांठ तक हम हिंदी को देश की राष्ट्रभाषा के रूप में आत्मसात कर लेंगे।

पंढरपुर की वारी

श्रीमती सविता अभय पाटील
कनिष्ठ अभियंता, 12044
जनेप प्राधिकरण, नवी मुंबई

महाराष्ट्र अनेक महान संतों की भूमि है। पिछले सात सौ वर्षों से महाराष्ट्र के सोलापुर जिले के पंढरपुर में प्रतिवर्ष देवशयनी एकादशी के पावन अवसर पर एक विशेष महायात्रा का आयोजन होता आ रहा है। पंढरपुर की इस यात्रा की विशेषता है उसकी 'वारी'। संतों के जन्म या समाधि स्थलों से, महाराष्ट्र के कोने-कोने से, पालकियां व दिंडियां निकलती हैं, जो लंबा सफर पैदल तय कर पंढरपुर पहुंचती हैं। इस यात्रा को ही 'वारी' कहते है । 'वारी' का अर्थ है - 'सालों-साल लगातार यात्रा करना' और हर साल पंढरपुर की वारी (तीर्थयात्रा) करने वाला पुरुष अथवा स्त्री 'वारकरी' कहलाता है । यह सम्प्रदाय 'वारकरी सम्प्रदाय' कहलाता है।

महाराष्ट्र में ईश्वर के सगुण-निर्गुण रूप की विविधता को एक रूप में बांधने का कार्य वारकरी संप्रदाय ने किया है। नामदेव, एकनाथ, तुकाराम, जनाबाई, विसोबा खेचर, नरहरी सोनार, सावता माली , गोरा कुंभार, कान्होपात्रा, चोखामेला, शेख मोहम्मद जैसे कई सन्तों ने वारकरी सम्प्रदाय अपनाया और उसे बढ़ावा दिया। लिंग, जाति, आर्थिक स्थिति या किसी भी पूर्वाग्रह के बिना, जो भी विट्ठल को माता-पिता और पंढरपुर को मायके के रूप में मानते हैं, उन सभी को संप्रदाय में स्वीकार किया जाता है।

प्रत्येक वर्ष पंढरपुर में लाखों लोग भगवान विट्ठल और रुक्मणि की महापूजा देखने के लिए एकत्रित होते हैं।

महाराष्ट्र अनेक महान संतों की भूमि है। पिछले सात सौ वर्षों से महाराष्ट्र के सोलापुर जिले के पंढरपुर में प्रतिवर्ष देवशयनी एकादशी के पावन अवसर पर एक विशेष महायात्रा का आयोजन होता आ रहा है। पंढरपुर की इस यात्रा की विशेषता है उसकी 'वारी'। संतों के जन्म या समाधि स्थलों से, महाराष्ट्र के कोने-कोने से, पालकियां व दिंडियां निकलती हैं, जो लंबा सफर पैदल तय कर पंढरपुर पहुंचती हैं। इस यात्रा को ही 'वारी' कहते है। 'वारी' का अर्थ है - 'सालों-साल लगातार यात्रा करना' और हर साल पंढरपुर की वारी (तीर्थयात्रा) करने वाला पुरुष अथवा स्त्री 'वारकरी' कहलाता है। यह सम्प्रदाय 'वारकरी सम्प्रदाय' कहलाता है।

महाराष्ट्र में ईश्वर के सगुण-निर्गुण रूप की विविधता को एक रूप में बांधने का कार्य वारकरी संप्रदाय ने किया है। नामदेव, एकनाथ, तुकाराम, जनाबाई, विसोबा खेचर, नरहरी सोनार, सावता माली, गोरा कुंभार, कान्होपात्रा, चोखामेला, शेख मोहम्मद जैसे कई सन्तों ने वारकरी सम्प्रदाय अपनाया और उसे बढ़ावा दिया। लिंग, जाति, आर्थिक स्थिति या किसी भी पूर्वाग्रह के बिना, जो भी विट्ठल को माता-पिता और पंढरपुर को मायके के रूप में मानते हैं, उन सभी को संप्रदाय में स्वीकार किया जाता है।

प्रत्येक वर्ष पंढरपुर में लाखों लोग भगवान विट्ठल और रुक्मणि की महापूजा देखने के लिए एकत्रित होते हैं। इसे 'वैष्णवजनों का कुम्भ' भी कहा जाता है। धरा का 'भू-वैकुंठ' (पृथ्वी पर विष्णु के निवास की जगह) कहा जाता है पंढरपुर। भीमा नदी के तट पर बसे इस प्रसिद्ध धार्मिक स्थल को दक्षिण का काशी भी कहा जाता है। पद्मपुराण में वर्णन है कि इस जगह पर भगवान श्रीकृष्ण ने 'पांडुरंग' रूप में अपने भक्त पुंडलिक को दर्शन दिए थे।

भक्त पुंडलिक माता-पिता के परम सेवक थे। एक दिन वे माता-पिता की सेवा में लगे थे, तभी श्रीकृष्ण उन्हें दर्शन देने के लिए द्वार पर पधारे। लेकिन पुंडलिक उस वक्त पिता के चरण दबा रहे थे इसलिए वे उठे नहीं। परंतु उस वक्त भगवान को खड़े होने के लिए उन्होंने ईंट सरका दी। भगवान कमर पर हाथ रखे ईंट पर खड़ी मुद्रा में स्थापित हुए थे इसीलिए मंदिर में भगवान की मूर्ति कमर पर हाथ रखे हुए उसी मुद्रा में खड़ी है। इस तरह यहाँ भगवान श्रीकृष्ण 'विठोबा' के रूप में हैं। जिन्होंने भक्त पुंडलिक की पितृभक्ति से प्रसन्न होकर उसके द्वारा फेंके हुए एक पत्थर (विट या ईंट) को ही सहर्ष अपना आसन बना लिया था, इसीलिए इनका नाम 'विठोबा', भगवान विट्ठल हो गया। विट्ठल अपने भक्तों के लिए अट्ठाईस युगों से खड़े हैं, ऐसा माना जाता है।

पंढरपुर तीर्थ की स्थापना 11वीं शताब्दी में हुई थी। मुख्य मंदिर का निर्माण 12वीं शताब्दी में देवगिरि के यादव शासकों द्वारा कराया गया था। श्री विट्ठल मंदिर यहां का मुख्य मंदिर है। वारी की शुरुआत के बारे में ऐसा माना जाता है कि 1685 में तुकाराम के सबसे छोटे बेटे द्वारा पादुका पालकी में ले जाने की परंपरा शुरू की गई थी।

पालकी - एक मुख्य संत के मार्गदर्शन में वारकरी समूह यानी दिंडी, विट्ठल के भजन गाते-गाते चलती है। कुछ महिलाएँ सिर पर तुलसी वृंदावन लिए साथ चलती हैं। तुलसी वृंदावन जो भगवान विठ्ठल की पत्नी रुक्मणि का प्रतीक है। पारंपारिक वाद्य जैसे की टाळ, मृदंग और वीणा की गूंज और संत ज्ञानेश्वर सहित तुकाराम के जयघोष से

वातावरण भक्तिमय हो जाता है ।'ज्ञानबा माऊली तुकाराम' के मंत्रों की गूंज से सारा माहौल भर जाता है। ज्ञानबा अर्थात संत ज्ञानेश्वर, संत तुकाराम... और माऊली अर्थात भक्त, वारकरी अपने संतों को, अपने भगवान को माँ के रूप में देखते हैं। इसलिए विट्ठल यहाँ विठू माऊली हो जाते हैं। वारकरी भी एक दूसरे को माऊली कहकर पुकारते हैं। ईश्वर हर एक की अंतरात्मा में बसे हुए हैं ऐसी सबकी धारणा होती है।

वारी की व्यवस्था ऐसी रहती है कि कोई भी हैरान हो जाएगा। साल-दर-साल सैकड़ों मीलों का सफर पैदल तय करके आते हैं वारकरी। कितना सफर, किस राह से कितनी देर में, कब और कहां रुकना है, कहां भोजन करना है, सबका समय सालों-साल पीढ़ियों से तय है। एक पीढ़ी खत्म, दूसरी आती है, नई पीढ़ी हाथों-हाथ तैयार होती है।

एक दिंडी यानी 250-300 लोगों का परिवार, जो सालभर एक-दूसरे के संपर्क में रहता है। हर दिंडी का एक मुखिया होता है, जिसके पास खर्च हेतु भक्तों ने अपनी-अपनी मर्जी से रुपए जमा किए होते हैं। सारा व्यवहार बिलकुल साफ, पारदर्शी, इंसान की ईमानदारी पर विश्वास रखने वाला। सामान ले जाने हेतु किराए पर ट्रक या टेम्पो भी तय होता है, जिस पर मुखिया अगले मुकाम पर पहले से ही पहुंच कर खाने-पीने का बंदोबस्त करता है। हर नगर में, हर ग्राम में पालकी का कहां स्वागत होगा, स्वागत कौन करेगा, इसकी भी परंपरा-सी बनी है। पालकी का निवास उस नगर के सबसे बड़े मंदिर में होता है। अन्य दिंडियां अलग-अलग मंदिरों, धर्मशालाओं में विश्राम करती हैं। हर रोज पालकी 20 से 30 किलोमीटर का रास्ता तय करके सूर्यास्त के साथ विश्राम के लिए रुक जाती है। इस यात्रा के दर्शन के लिए पूरे रास्ते पर दोनों ओर लोगों की भारी भीड़ होती है। इस पालकी समारोह का आकर्षण भारत के ही नहीं बल्कि विदेश के लोगों में भी है। वारी पर शोध करने के लिए आज तक जर्मनी, इटली, जापान, जैसे कई देशों से लोग वारी में शामिल हो चुके हैं। हर साल कई विदेशी

लोग भी इस वारी का अनुभव लेने हेतु वारी में शामिल होते हैं।

आषाढ़ी एकादशी के दिन पंढरपुर पहुंचने का उद्देश्य सामने रखकर, उसके अंतर के अनुसार हर पालकी का अपने सफर का कार्यक्रम तय होता है। इस मार्ग पर कई पालकियां एक-दूसरे से मिलती हैं और उनका एक बड़ा कारवां बन जाता है। वारी में दो प्रमुख पालकियां होती हैं। उनमें एक संत ज्ञानेश्वरजी की तथा दूसरी संत तुकारामजी की होती है। यह सारी पालकियां पंढरपुर के नजदीक वाखरी गांव में यात्रा के एक दिन पहले पहुंचती हैं। वहां पर एक बड़ी परिक्रमा का आयोजन किया जाता है। इसे 'रिंगण' कहते है, रिंगण का अर्थ है – चक्र। रिंगण एक पवित्र और श्रद्ध्येय संकल्पना है। यह इतना मनभावन और आश्चर्यजनक नज़ारा होता है कि कहते हैं, ऐसा नज़ारा स्वर्ग में भी नहीं होगा।

वाखरी गांव में एक बड़े मैदान में लाखों वारकरी एक दूसरे के हाथ पकड़कर गोलाकार में खड़े रहते है। पूरा रिंगण रंगोली के रंगों से रंग जाता है। खुली जगह से दो घोड़े दौड़ते हैं। जो एक प्रमुख घोड़ा दौड़ता है, इसे 'माऊली का अश्व' कहते हैं। इस अश्व पर स्वयं ज्ञानेश्वर महाराज आरूढ़ होते हैं ऐसी वारकरी संप्रदाय में धारणा है। दूसरे पर सेवक हाथ में वारकरी संप्रदाय का ध्वज लिए बैठता है। जब घोड़े दौड़ने लगते हैं तो उनके पीछे लाखों वारकरी भी दौड़ लगाते हैं। ऐसा माना जाता है कि जब

संत तुकाराम महाराज पंढरपुर जा रहे थे, तो यहाँ से उनको विठ्ठल मंदिर के कलश के दर्शन हुए और वो भाव-विभोर होकर सब कुछ भूलकर वहाँ से पंढरपुर तक दौड़ते हुए गए। इसका स्मरण कर वारकरी यहाँ से पंढरपुर तक का आखिरी पड़ाव दौड़कर जाते हैं। 18 से 20 दिन की पैदल यात्रा कर वारकरी 'देवशयनी एकादशी' के दिन पंढरपुर पहुंच जाते हैं। अपनी मंजिल हासिल कर लेते हैं, उनका विठोबा - एक श्यामल सुंदर मुद्रा, एक शंकु के आकार का मुकुट पहने हुए, जो शिव लिंग का प्रतीक है, ईंट पर अपनी कमर पर हाथ रख कर खड़ा है। जिसके गले में तुलसी की माला है, मछली के आकार की कानों में बालियां हैं, बाएं हाथ में शंख तथा दाहिने हाथ में एक कमल का फूल है।

टाल - मृदंग की ध्वनि, माउली.. माउली... के जयघोष चारों ओर सुनाई देते हैं। न कोई थकान, न कोई चिंता, बस एक एक चेहरे के आनंद का, वारी के अनुभव का अर्थ शब्दों में नहीं लिख सकते। इसी आनंद, प्रेम, चैतन्य का उत्सव है वारी। वारी में शामिल होना या वारकरी बनना यह एक परिवर्तन का आरंभ है। इसलिए यदि कोई वैष्णव हो या न हो, एक बार वारी के साथ यात्रा करने का अनुभव ग्रहण करना बड़ा ज़रूरी है। वारी से जुड़ने पर मनुष्य के विचारों में परिवर्तन होता है और फलस्वरूप उसके आचरण में भी परिवर्तन होता है। यह पूरी प्रक्रिया वारी में अपने आप शुरू हो जाती है, क्योंकि वारी का उद्देश्य है - ईश्वर के पास पहुंचना, निकट जाना। वारी में दिन-रात भजन-कीर्तन, नामस्मरण चलता रहता है। अपने घर की, कामकाज की, खेत की समस्याओं को पीछे छोड़कर वारकरी वारी के लिए चल पड़ते हैं। किंतु वारकरी दैववादी बिल्कुल नहीं होता, बल्कि प्रयत्नवाद को मानकर अपने क्षेत्र में अच्छा कार्य करता है, क्योंकि हर काम में वह ईश्वर के दर्शन ही करता है।

वारी के 20 दिनों में जमा सुख की पूंजी को सालभर किफायत के साथ खर्च करते रहना और इंतजार करना फिर अगली वारी का। हर वारकरी की जीवन की अंतिम अभिलाषा यही होती है कि हे विठुराया, हमें मुक्ति न देते हुए फिर मानव जन्म ही देना ताकि हर जन्म में विठ्ठल की भक्ति का लाभ मिल सके।

'पुंडलिकवरदे श्री हरि विठ्ठल...श्री ज्ञानदेव तुकाराम...पंढरीनाथ महाराज की जय' कहते हुए अपने अपने घर की ओर निकल पड़ते हैं।

सत्य की शक्ति सत्यमेव जयते

- श्रीमती स्मिता शेट्ये

परिचारिका, कर्मचारी क्र.- 12303

जनेप अस्पताल

साँच बराबर तप नहीं, झूठ बराबर पाप।
जाके हृदय साँच है, ताके हृदय आप ।।

संत कबीर द्वारा रचे गए इस सूक्ति परक दोहे का सीधा और सरल अर्थ इस प्रकार किया जा सकता है कि इस नश्वर और तरह-तरह की बुराईयों से भरे विश्व में सच बोलना सबसे बड़ी तपस्या है।

इसके विपरीत जिसे पाप कहा जाता है- जैसे बात-बात पर झूठ बोलते रहना, छल-कपट और झूठ से भरा व्यवहार तथा आचरण करना। जिस किसी व्यक्ति के हृदय में सत्य का वास होता है, ईश्वर स्वयं उसके हृदय में निवास करते हैं। जीवन के व्यावहारिक सुख भोगने के बाद अंत में वह आवागमन की मुश्किल से छुटकारा भी पा लेता है। इसके विपरीत मिथ्याचरण व्यवहार करने वाला, हर बात में झूठ का सहारा लेने वाला व्यक्ति न तो चिंताओं से छुटकारा प्राप्त कर पाता है, न ही प्रभु की कृपा का अधिकारी बन पाता है। वह पारलौकिक सुख एवं मुक्ति के अधिकार से भी वंचित हो जाता है ।

सत्य भाषण से मनुष्य की आत्मा बलवान होती है। उसके मन को सुख और शान्ति प्राप्त होती है। सत्यवादी को कभी यह भय नहीं रहता कि यदि उसकी पोल खुल गई तो क्या होगा ? इसके विपरीत झूठ बोलने वाले की समाज

में हमेशा निन्दा होती रहती है। वह हर समय यही सोचता रहता है कि कहीं उसके झूठ की पोल खुल न जाये।

सत्यवादी की समाज में प्रतिष्ठा बढ़ती है। वह सिर ऊंचा करके चल सकता है जबकि असत्यवादी की समाज में प्रतिष्ठा घट जाती है। सत्यमेव जयते अर्थात – ''सत्य की हमेशा विजय होती है'' यह भारत के राष्ट्रीय प्रतीक 'अशोक स्तंभ' के नीचे देवनागरी लिपि में अंकित है। यह प्रतीक उत्तर प्रदेश में वाराणसी के निकट सम्राट अशोक द्वारा बनवाये गए सिंह स्तम्भ के शिखर से लिया गया है।

'सत्यमेव जयते' भारत सरकार ने यह चिन्ह 26 जनवरी, 1950 को अपनाया, इसमें केवल तीन शेर ही दिखाई पड़ते हैं। चौथा दिखाई नहीं देता - पट्टी के मध्य में एक चक्र है जिसके दाई तरफ एक सांड और बाई तरफ एक घोड़ा है। 'सत्यमेव जयते' को राष्ट्रपटल पर लाने और उसका प्रचार करने में मदन मोहन मालवीय की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। 'सत्यमेव जयते' की मूल भावना को

स्वीकार करते हुए अर्थात् इसके मूल अर्थ को समझते हुए, अपने कर्तव्यों का पालन करना चाहिए और जो इसका पालन नहीं करता, इसका अपमान करता है, वह राष्ट्रद्रोही है

जो व्यक्ति सत्य बोलते हैं तथा इसके पथ पर अग्रसर रहते हैं वे सदैव जीवन में उन्नति प्राप्त करते हैं, परन्तु असत्य बोलने वाले व्यक्ति की कभी विजय नहीं होती। अत: यदि हम अपने जीवन में आगे बढ़ना चाहते हैं तो हमें अपने माता-पिता, गुरूजनों व अन्य स्वजनों से कभी असत्य नहीं बोलना चाहिए। इसलिए जीवन को झूठ के सहारे, पाप का जीवन नहीं बनने दीजिए। सत्य के तप से तपकर कुंदन और लोक-परलोक का स्वर्ग बनाइए। इसलिए ही तो मनुष्य देह मिली है। इसकी सफलता – सार्थकता भी 'सत्य' के इसी

इंद्रधनुष

- श्रीमती नीलम प्र. केलकर,
मेट्रन (जनेप अस्पताल)

सात रंगों से बना ये इंद्रधनुष,
लगता बहुत ही प्यारा है।

इन रंगों में ही समाया,
जीवन अपना सारा है।

बैंगनी रंग – आज्ञा, निडरता और वफादारी दर्शाता है,
नीला रंग – विशुद्ध संवाद की शक्ति को बतलाता है।

आसमानी रंग – है शांति देता .....
हरा रंग – खुशहाली है।

पीला रंग – विद्या और बुद्धिमत्ता को दर्शाता है,
नारंगी रंग – सफलता और शालीनता दिखलाता है।

लाल रंग – जीवन में ऊर्जा और सौभाग्य लाता है .....

सात रंगों से सजा ये इंद्रधनुष,
सबके मन को भाता है।

आओ झूमें तिरंगा लेकर

श्री संतोष भिवा परब
सहायक प्रबंधक
कर्मचारी क्र.10716

स्वातंत्र्यसूर्य की स्वर्णिम रश्मि
सारे जग को करे उजागर।
अमृत पर्व के पुण्यकाल में
आओ झूमे तिरंगा लेकर।

अपनी भारत माँ मनभावन
माथे पर किरीट हिमालय।
बहुरंगी चुनरी लहराये
पग में नदियों की है पायल।

क्रांतिकारी, वीरों के लिए
दीप स्मृति में जलते हैं।
सत्य, अहिंसा और शांति के
मार्ग पर हम चलते हैं।

इतिहास के पावन पन्नों पर
है शौर्य, त्याग और बलिदान।
गर्व से सबको कहते हैं
हम भारतीय अपना अभिज्ञान।

विविध योजनाऐं अपनी
सिध्द हुई बड़ी कारगर।
शिक्षा, मेहनत और लगन से
देश बना है आत्मनिर्भर।

आकाश में चला चंद्रयान
प्रज्ञा से तेजोमय होकर।
कृषि, विज्ञान हर क्षेत्र में
मेरा भारत है अग्रसर।

महान मेरा अतुल्य भारत
विश्वशांति के लिये शुभांकर ।
समता ,एकता का प्रतीक
आओ झूमे तिरंगा लेकर।
आओ झूमे तिरंगा लेकर ।।

हिन्दी पखवाड़ा 2023

(क) विभिन्न हिन्दी प्रतियोगिताओं के विजेताओं की सूची

क्र.सं	प्रतियोगिता का नाम	पुरस्कार राशि	विजेताओं के नाम	पदनाम	विभाग
1	हिन्दी पत्र लेखन तथा शब्दावली प्रतियोगिता	प्रथम	श्री धनंजय गावडे	सहायक प्रबंधक	यातायात
		द्वितीय	श्री गणेश गंगाराम मोकल	प्रबंधक	वित्त
		तृतीय	श्री मधुकर शां. कोली	वरिष्ठ सहायक	प्रशासन
		प्रेरणा	श्री संतोष भिवा परब	सहायक प्रबंधक	यां. एवं वि. अभि.
		प्रेरणा	श्री प्रकाश चंद्रकांत नाईक	चेकर ग्रेड-1	प्रशासन
		प्रेरणा	श्री ललित लक्ष्मीकांत पाटील	कनिष्ठ सहायक	वित्त
2	हिन्दी निबंध लेखन प्रतियोगिता	प्रथम	श्रीमती स्मिता शेट्ये	परिचारिका	अस्पताल
		द्वितीय	श्री संतोष भिवा परब	सहायक प्रबंधक	यां. एवं वि. अभि.
		तृतीय	श्रीमती नीलम केलकर	मेट्रन	अस्पताल
		प्रेरणा	सुश्री वृषाली प्रदीप उबाळे	आश्रित	अस्पताल
		प्रेरणा	श्री गणेश गंगाराम मोकल	प्रबंधक	वित्त
		प्रेरणा	श्री मधुकर शां. कोली	वरिष्ठ सहायक	प्रशासन
3	हिन्दी कहानी लेखन प्रतियोगिता	प्रथम	श्रीमती रती मदन जठार	आशुलिपिक	वित्त
		द्वितीय	श्री मनोहर गुजेला	सहायक प्रबंधक	यातायात
		तृतीय	श्रीमती बेला आगलावे	वरिष्ठ सहायक	प्रशासन
		प्रेरणा	श्री संतोष भिवा परब	सहायक प्रबंधक	यां. एवं वि. अभि.
		प्रेरणा	श्रीमती भारती ठाकूर	लिपिक	अस्पताल
		प्रेरणा	श्री गणेश गंगाराम मोकल	प्रबंधक	वित्त
4	हिन्दी कविता पाठ प्रतियोगिता	प्रथम	श्रीमती बेला आगलावे	वरिष्ठ सहायक	प्रशासन
		द्वितीय	श्रीमती भारती ठाकूर	लिपिक	अस्पताल
		तृतीय	श्री मधुकर शां. कोली	वरिष्ठ सहायक	प्रशासन
		प्रेरणा	सुश्री रजनी घरत	आशुलिपिक	प्रशासन
		प्रेरणा	श्री संतोष भिवा परब	सहायक प्रबंधक	यां. एवं वि. अभि.
		प्रेरणा	श्री गणेश गंगाराम मोकल	प्रबंधक	वित्त
		निर्णायक	श्री नितिन बोरवणकर	मुख्य महाप्रबंधक	यां. एवं वि. अभि.
			श्रीमती मनिषा जाधव	महाप्रबंधक (प्र.) एवं सचिव	प्रशासन

5	**कम्प्यूटर पर हिन्दी टंकण प्रतियोगिता (अन्य वर्ग)**	प्रथम	श्री मधुकर शां. कोली	वरिष्ठ सहायक	प्रशासन
		द्वितीय	श्रीमती जयश्री प्रशांत पाठारे	वरिष्ठ सहायक	प्रशासन
		तृतीय	श्री संदीप मुकुंद घरत	लिपिक	अस्पताल
		प्रेरणा	श्री नंदकुमार यशवंत कडू	लिपिक	यातायात
		प्रेरणा	श्रीमती मनीषा कामत	लिपिक	पयोवि
		प्रेरणा	श्री प्रकाश चंद्रकांत नाईक	चेकर ग्रेड-1	प्रशासन
6	**कम्प्यूटर पर हिन्दी टंकण प्रतियोगिता (आशुलिपिक वर्ग)**	प्रथम	श्रीमती स्वाती निलेश पाटील	आशुलिपिक	प्रशासन
		द्वितीय	श्रीमती वैजयंती के. तांबोली	निजी सहायक	यातायात
		तृतीय	श्रीमती अनुजा अ. पाटील	आशुलिपिक	प्रबंधन सेवा
		प्रेरणा	श्रीमती प्राजक्ता पराग म्हात्रे	आशुलिपिक	प्रशासन
		प्रेरणा	श्रीमती रती मदन जठार	आशुलिपिक	वित्त
		प्रेरणा	श्री अनिल बाबू चिर्लेकर	आशुलिपिक	प्रापण
7	**श्रुत लेखन प्रतियोगिता**	प्रथम	श्रीमती नीलम केलकर	मेट्रन	अस्पताल
		द्वितीय	श्रीमती बेला आगलावे	वरिष्ठ सहायक	प्रशासन
		तृतीय	श्री संदीप मुकुंद घरत	लिपिक	अस्पताल
		प्रेरणा	श्रीमती अनिता प्रदीप ठाकूर	वरिष्ठ सहायक	यां. एवं वि. अभि.
		प्रेरणा	श्री संतोष भिवा परब	सहायक प्रबंधक	यां. एवं वि. अभि.
		प्रेरणा	श्री गणेश गंगाराम मोकल	प्रबंधक	वित्त
8	**हिन्दी भाषण प्रतियोगिता**	प्रथम	श्रीमती रती मदन जठार	आशुलिपिक	वित्त
		द्वितीय	श्री भालचंद्र ठाकूर	कनिष्ठ सहायक	प्रशासन
		तृतीय	श्रीमती भारती ठाकूर	लिपिक	अस्पताल
		प्रेरणा	श्री गणेश गंगाराम मोकल	प्रबंधक	वित्त
		प्रेरणा	श्री सचिन मरकड	प्रबंधक	प्रशासन
		प्रेरणा	श्री संतोष भिवा परब	सहायक प्रबंधक	यां. एवं वि. अभि.
		निर्णायक	कप्तान बाळासाहेब पवार	उप संरक्षक	समुद्री
			श्री पंकज कमल	उप महाप्रबंधक	वित्त
9	**हिन्दी अन्ताक्षरी प्रतियोगिता**	प्रथम	श्री मनोहर गुजेला	सहायक प्रबंधक	यातायात
			श्री दिलीप कदम	अभियंता	यातायात
		द्वितीय	श्री संदीप मुकुंद घरत	लिपिक	अस्पताल
			श्रीमती भारती ठाकूर	लिपिक	अस्पताल
		तृतीय	श्री महेश जाधव	चेकर	यातायात
			श्रीमती निर्मला रविंद्र पाटील	आश्रित	प्रशासन
		प्रेरणा	श्रीमती बेला आगलावे	वरिष्ठ सहायक	प्रबंधन सेवा
			श्री संदीप आर. पाटील	चेकर ग्रे-4	प्रशासन

		प्रेरणा	श्रीमती नीलम प्र. केलकर	मेट्रन	अस्पताल
			श्रीमती जागृति धुमाल	परिचारिका	अस्पताल
		प्रेरणा	श्री प्रमोद पवार	तकनीशियन	यां. एवं वि. अभि.
			श्रीमती अनिता ठाकूर	वरिष्ठ सहायक	यां. एवं वि. अभि.
		सहयोगी	श्री प्रमोद पाटील	प्रोग्रामर	प्रबंधन सेवा
			श्री जनार्दन जे. घरत	चेकर ग्रेड 4	समुद्री
10	**हिंदी गीत गायन प्रतियोगिता**	प्रथम	श्री उत्तमकुमार कडवे	तकनीशियन	यातायात
		द्वितीय	श्री महेश जाधव	चेकर	यातायात
		तृतीय	श्री प्रमोद पवार	तकनीशियन	यां. एवं वि. अभि.
		प्रेरणा	श्री संदीप मुकुंद घरत	लिपिक	अस्पताल
		प्रेरणा	डॉ. मिलिंद भोसकर	वरि. चिकित्सा अधिकारी	अस्पताल
		प्रेरणा	श्रीमती पुष्पलता धनावडे	लिपिक	वित्त

(ख) वर्ष 2022-23 में राजभाषा निष्पादन में सहयोग करने वाले पुरस्कृत हिन्दी सम्पर्क अधिकारियों की सूची :

क्र.सं	सम्पर्क अधिकारी का नाम	क्र.सं	सम्पर्क अधिकारी का नाम
01	श्री विश्वनाथ घरत, उप महाप्रबंधक (पयोवि)	06	श्री भरत मढवी, प्रबंधक (यातायात)
02	श्री सुहास कामतीकर, उप महाप्रबंधक (प्रबंधन सेवा)	07	श्री गणेश गंगाराम मोकल, प्रबंधक (वित्त),
03	श्री सागर गुरव, प्रबंधक (प्रशासन)	08	डॉ. मिलिंद भोसकर, वरिष्ठ चिकित्सा अधिकारी
04	श्री संजय सक्सेना, प्रबंधक (अ. तथा सु.)	09	श्री स्वप्निल पोकुलवार, प्रबंधक (सतर्कता)
05	श्री एस. पी. सिंह, प्रबंधक (उप. सेवाएँ)		

शब्दकोश (VOCABULARY)
पत्तन, पोत परिवहन के संदर्भ में (IN CONTEXT OF PORT & SHIPPING)

अधोलिखित शब्द हमारे पत्तन के विविध कार्यों में प्रयोग होते हैं। हमें आशा है कि यह शब्दकोश अन्य पत्तनों के लिए भी सहायक होगा तथा राजभाषा के अधिकाधिक प्रयोग को साकार करने में सहायक होगा। पत्तन में दैनिक प्रयोग होने वाले अँग्रेजी के शब्दों के स्थान पर राजभाषा में अनूदित इन शब्दों के प्रयोग से हमारे श्रमिकों और अधिकारियों के बीच न केवल प्रभावी सम्प्रेषण होगा बल्कि हमारी राजभाषा भी सम्मानित होगी।

Ministry of port, shipping and waterways = पत्तन, पोत परिवहन और जलमार्ग मंत्रालय
Pre berthing delay = घाटायन पूर्व विलम्ब
Voluntary Retirement Scheme = स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति योजना
Floating craft = प्लवन यान
All weather tidal port = बारहमासी ज्वारीय पत्तन
Handle = प्रहस्तन
Harbour = बन्दरगाह
Dock = गोदी
Port craft = पत्तन नौका
Tide = ज्वार
Marine = समुद्री
Light house = दीप स्तम्भ
Loading = लदाई
Discharge = उतराई
Oil spill = तेल छलकाव
Quay line = घाट
Manoeuvring area = घूमने का क्षेत्र
Dredge = निकर्षण करना
Operation = प्रचालन
Draft (in context of ship sailing) = गहराई
Major port = महा पत्तन
Coastal berth = तटीय घाट
Overhaul = जीर्णोद्धार करना

Coastal Shipping = तटीय नौवहन

Shallow= उथला

Jetty= घाट

Vessel= जलयान

Delegation of powers = शक्तियों का प्रत्यायोजन

On lease = पट्टे पर

Invoice= बीजक

Shore = तट

Nautical miles = समुद्री मील

Reimbursement = प्रतिपूर्ति

Follow up action = अनुवर्ती कार्यवाही

Corporate Social Responsibility = निगमित सामाजिक दायित्व

License=अनुज्ञप्ति

Navigation = नौवहन / नौचालन

Mounted= आरूढ़

Preventive Maintenance = निवारात्मक अनुरक्षण

Preventive Vigilance = निवारात्मक सतर्कता

Advance= अग्रिम

Estate= सम्पदा

Special Economic Zone= विशेष आर्थिक क्षेत्र

MoU (Memorandum of Understanding)= समझौता ज्ञापन

Disburse= वितरीत करना

Equipment =उपस्कर

Integration= समेकन

Installation= संस्थापना

Logistics = परिभारिकी

माँ भारती

श्रीमती सविता अभय पाटील
कनिष्ठ अभियंता,12044

मंगल भूमि पुनीत भूमि
हमारी प्रिय माँ भारती
किन शब्दों में उतारू
माते, मैं तेरी आरती

मेरु पर्बत की लेखनी
और सागर की स्याही
आकाश के पन्नों पर
लिखूं गुणगौरव आरोही

सूरज का दीपक जलांऊ
और चंद्रमा की ज्योति
तारों की चमचम मालाऐं
रूप अनमोल संजोती

रंग केसरिया क्रांति का
ललाट पर तिलक सोहे
कृषक – श्रमिक के स्वेद से
चैतन्य हरा रंग मन भाये

श्वेत रंग है शांति का
मानवता की करे साधना
हृदय बसत अशोक चक्र
ज्ञान विचार की चेतना

तिरंगे संग माँ सुंदरी
अध्यात्मिकता से शुचित है
स्वर्ग सहोदर मिट्टी मेरी
जन्म-जन्म का संचित है

तन-मन से करेंगे रक्षण
अखंड तेरा यह सिंगार
युग-युग विश्व में गूंजे
जय-जय भारत झंकार

हिन्दी पखवाड़ा 2023 के दौरान विविध प्रतियोगिताओं का आयोजन एवम् समापन समारोह